चन्दामामा
दीपावली विशेषांक
75
P

awards For 1963 & 1964

1963 First Prize for printing the Indian Oil Corporation Ltd, 1964 Calendar.

First Prize for printing the S.K.F. Ball Bearing Co. Pvt. Ltd. 1964 Calendar.

Second Prize for designing and printing the Hyderabad Asbestos Cement Products 1964 Calendar.

Second Prize for printing the *Grow More Vegetables* Poster for DAVP, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India.

Certificate of Merit for printing the A.P.I. 1964 Calendar.

**Also won First Prize from the American Society of travel Agents.

The progress made in quality and service is reflected in all-round expansion. Today, the press stands on a 10-acre site: the press room alone occupies an area of 12,000 square yards, complete with a battery of machinery and equipment working daily round the clock.

PRASAD PROCESS PRIVATE LIMITED

OFFSET PRINTERS, CHANDAMAMA BUILDINGS, MADRAS-26

जीवन यात्रा के पथ पर शक्ति की आवश्यकता है।

इनको लाल-शर पिलाइये

(डाबर बालामृत)

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि० कलकत्ता-२९

चन्दामामा

अपने बच्चे को
सर्दी-ज़ुकाम से
पीड़ित
न होनें दें

विक्स वेपोरब तुरन्त आराम पहुंचाता है...
आपका बच्चा आसानी से सांस ले सकता है...वह रात भर आराम से सो सकता है।

आपके बच्चे की सुख-सुविधा आप पर ही निर्भर है। इस लिए जब आपके बच्चे में सर्दी-ज़ुकाम के आरम्भिक लक्षण दिखायी दें, जैसे नाक का बहना, आंखों से पानी गिरना, गले का बैठ जाना, सांस लेने में तकलीफ, तो विक्स वेपोरब मलिये।

विक्स वेपोरब आपके बच्चे के सर्दी-ज़ुकाम का सर्वोत्तम इलाज है क्योंकि यह सर्दी से प्रभावित उन सभी भागोंपर, जैसे नाक, छाती और गले में, जहां सर्दी की पीड़ा सबसे ज्यादा होती है, असर करता है और आपके बच्चे की कोमल त्वचा को इससे तनिक भी क्षति नहीं पहुंचती।

बस विक्स वेपोरब मलिये और अपने बच्चे को कम्बल ओढ़ा कर आराम से बिस्तरपर सुला दीजिये। विक्स वेपोरब अपना काम करता रहेगा। जबकि आपका बच्चा रात भर चैन की नींद सोता रहेगा। सुबह तक सर्दी-ज़ुकाम की पीड़ा जाती रहेगी और आपका लाडला मुन्ना स्वस्थ और हंसता-खेलता उठेगा।

विक्स वेपोरब ३ साइज़ में
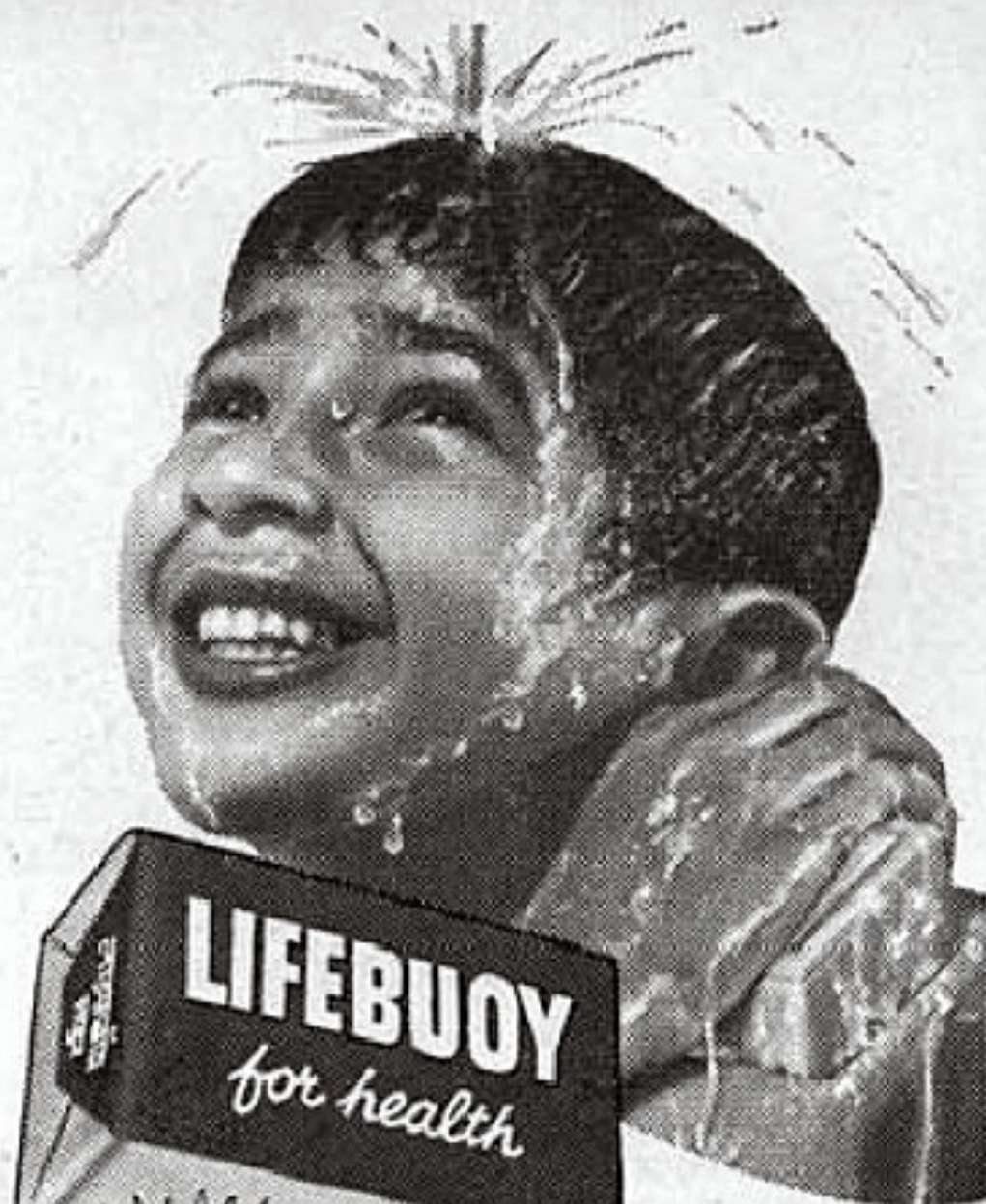
LIFEBUOY
for health
अब
एक नई
शान के साथ!
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

GEVABO

गॅवाबॉक्स !

आप भी **गॅवाबॉक्स** कैमरा लीजिये—
अच्छे से अच्छे और सुन्दर चित्र उतारिये।
□ ३ स्पीड, २ अॅपर्चर □ 'ऑल-मॅटल' बॉडी □ कीमत सिर्फ़ रु. ३८/-
गॅवाबॉक्स, स्थानीय ए पी एल डीलर से लीजिये।
भारत में बनाया हुआ।

एलाइड **फ़ो**टोग्राफ़िक्स **लि**मिटेड

कस्तूरी बिल्डिंग, जमशेदजी टाटा रोड, बंबई-१।

आपको भी एक फिलिप्स बाइसिकिल चाहिए

शानदार और सुन्दर फिलिप्स साइकिल आप जैसे, आज के कार्यव्यस्त युवकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाई जाती है। पक्के पानी चढ़ाये इस्पात से बननेवाली यह साइकिल ऐसी मजबूत है कि बुरी से बुरी हालत में भी बिलकुल ठीक चलती है। करीब ७० वर्षों से सारी दुनिया में मशहूर यह फिलिप्स साइकिल, टी॰ आई॰ साइकिल्स के आधुनिक कारखाने में शुद्ध रीति से बनती है।

PHILLIPS

टी॰ आई॰ साइकिल्स आफ इन्डिया
अम्बातूर, मद्रास

JWT/TIC : PH 2053A

for fine FRAGRANCE
Kala Golden Bathi
MADE IN INDIA
Kalakar Agarbathi
N. K. BHARATHARAJ SETTY & SONS
AVENUE ROAD, BANGALORE-2

डबल रोटी गायब ?

जी हां, जब

पोलसन का मक्खन

मौजूद हो तो टेबल पर डबल रोटी कितनी देर पड़ी रहेगी! स्वादिष्ट पोलसन का मक्खन घर में हर व्यक्ति को बेहद पसंद है। यह सेहतमंद भी है। इस से आवश्यक पौष्टिकता और ताकत भी मिलती है। अपनी जिंदगी को ज्यादा जिंदादिल बनाइये — पोलसन का मक्खन अपनाइये!

पोलसन सर्वोत्तम मक्खन के लिए पहला और आखिरी नाम!

भेंट के लिए कूपन इकट्ठे कीजिये

पोलसन – कॉफी, घी, आटा और चाय का भी घरेलू नाम

पोलसन लिमिटेड–बम्बई • आणंद • पटना

PL-1149 A HIN EA

नौनिहाल

बच्चों को स्वस्थ रखता है

एक चम्मच नौनिहाल आप के बच्चे को ढेर सारा स्वास्थ्य देकर उसे चुस्त और प्रफुल्ल रखता है। आप सदा अपने बच्चे को नौनिहाल ग्राइप सिरप और नौनिहाल बेबी टानिक दीजिये। आप का बच्चा दिन रात चौबिसों घंटे स्वस्थ और प्रसन्न रहेगा।

दिल्ली – कानपुर – पटना

mas HDN 135 D HIN

दिलीप और साथियों का
आँख-मिचौली खेल
आखिर पकड़े गये दोस्त!
ऊह!
लो यहाँ पर हो तुम!
हर जगह छान मारी लेकिन अशोक का कहीं पता ही नहीं!
भाई, अब मैं हार गया! तुम सभी अगर ढूँढने में मेरी मदद करो तो बात और है!
दिलीप!
दिलीप इधर आना!
अशोक शायद यहीं छुपा है! जल्दी करो! ढूँढना तो है ही!
दिलीप मेरी बात मानो— अब बिना टॉर्च के उसे खोजना मुमकिन नहीं!
मुझे तो कुछ भी दिखलाई नहीं देता!
बेचारा अशोक!
दिलीप, प्यारे तुम किस्मत वाले हो— टॉर्च से ढूँढकर निकाला इसे!
मैं तो सोचता था कि तुम सब इस जन्म में तो मुझे खोज नहीं सकते थे!
जरा संभाल कर ऊपर निकालो इसे!
मैं क्यों डरता— मेरा 'एवरेडी' टॉर्च जो पास में था!

सीखने में देर क्या, सबेर क्या

खाना पकाना सीखना, यह तो स्याना होने की बहुत सी बातों में से एक है। आप भी उसे एक बात जरूर सिखायें, वह यह कि दांतों व मसूड़ों का नियमित रूप से ख्याल कैसे रखा जाय। दादी मां बन जाने पर भी उसका चेहरा अच्छे व असली दांतों से सुहाना रहेगा। वह आप की बुद्धि की प्रशंसा करेगी और धन्यवाद देगी कि आपने उसे सड़े-गले दांतों और मसूड़ों की पीड़ा से बचा लिया। आज ही अपने बच्चों को सब से अच्छी आदत डालें-दांतों व मसूड़ों की सेहत के लिए उन्हें हर रोज फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। अमरीका के दांत-डाक्टर आर. जे. फोरहन का यह टूथपेस्ट दुनिया में ऐसा एक ही टूथपेस्ट है, जिस में मसूड़ों को मजबूत व अच्छा, दांतों को चमचमाता सफेद रखने की खास चीज़ है।

यह शुभ निश्चय अभी कर लें: अपने बच्चों को जिन्दगीभर उपयोगी आदत यानी रोज फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना आज ही सिखायें। और "CARE OF THE TEETH & GUMS" नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिए डाक-खर्च के २५ न. पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मैनर्स डेंटल एडवाइसरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

COUPON

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name..

Address..

....

C. I

Forhan's
FOR

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

एक वर्ष समाप्त हो गया और अब फिर दीपावली आ गयी है। समय किस तीव्र गति से जा रहा है।

हर वर्ष की तरह हम इस वर्ष भी "चन्दामामा" का विशेष अंक सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है आप इसे पसन्द करेंगे।

दीपावली "चन्दामामा" के सभी पाठकों के लिए मंगलप्रद हो। शुभ प्रद हो।

वर्ष: १६ नवम्बर १९६५ अंक: ३
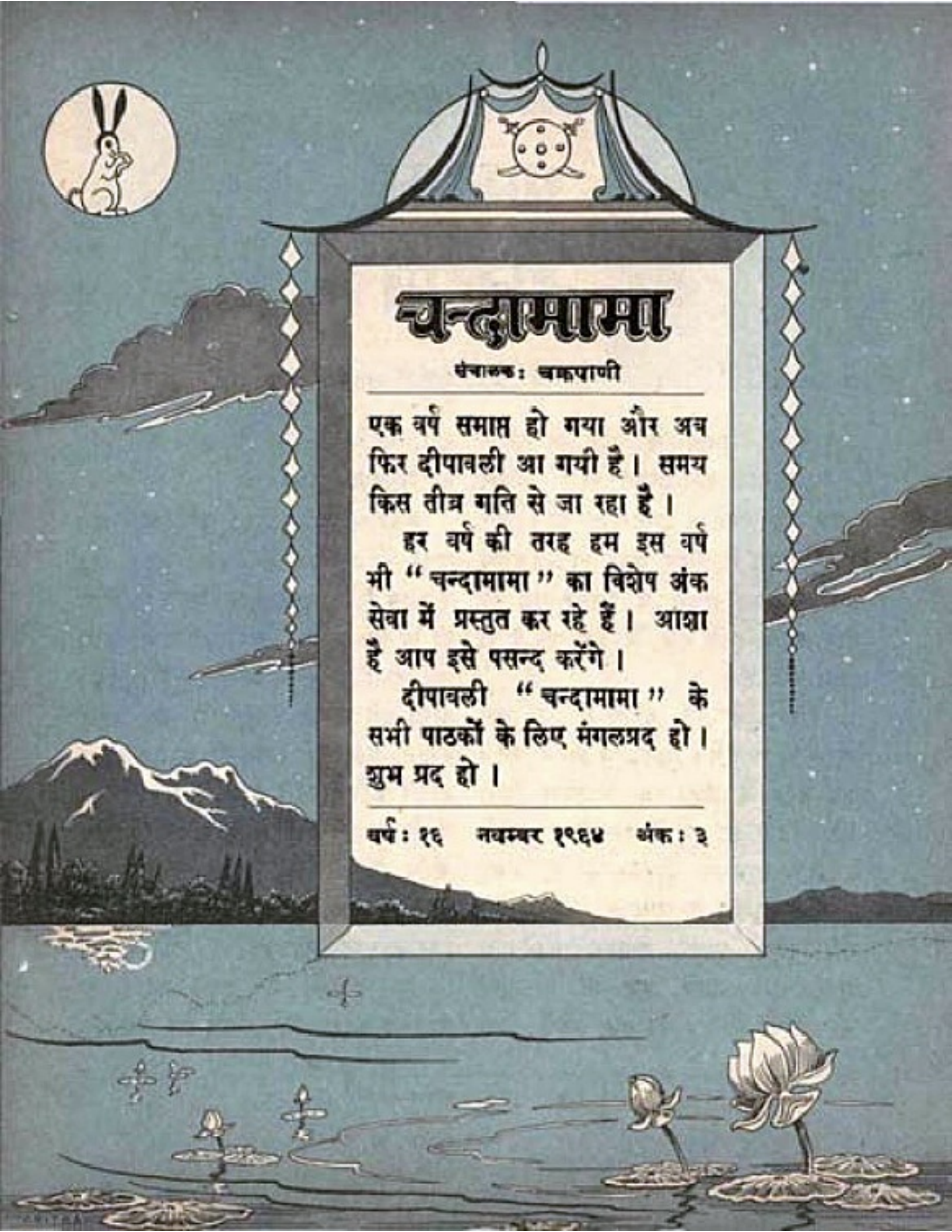
भारत का इतिहास

भारत में, मुगलों के आने से पहिले अफगानों का शासन था। लेकिन दिल्ली की सल्तनत ह्रासोन्मुख थी। इस कारण भारत में, जगह जगह स्वतन्त्र राज्य बन गये, उन राज्यों में परस्पर युद्ध भी होने लगे—इनके बारे में हम पहिले ही लिख चुके हैं।

१५२६ से पूर्व, मुगलों ने जो उत्तर भारत पर आक्रमण किये, वे विफल रहे। जब तैमूर ने दिल्ली पर आक्रमण किया और पंजाब को वश में कर लिया, उससे अफगान साम्राज्य बलहीन तो हो गया, पर उससे मुगलों के साम्राज्य की स्थापना नहीं हुई। इसकी स्थापना करनेवाला बाबर था। उसके बाद भी अफगानों और मुगलों में ३० वर्ष तक लड़ाई होती रही, आखिर अकबर के समय में मुगलों का आधिपत्य स्थिर हुआ।

बाबर का पिता तैमूर का वंशज था। माता चेन्गजखान की वंशज थी। वह १४८३ में पैदा हुआ। जब वह ११ वर्ष का ही था कि उसने पिता से फर्गान की (यह अब चीनी तुर्किस्तान में है) जागीर पाई। परन्तु उसे बचपन में बहुत से कष्ट उठाने पड़े। तैमूर की राजधानी समरकन्द को जीतने के लिए उसने १४९७ और १५०३ में जो प्रयत्न किये, वे असफल रहे और फर्गान भी चला गया। उसे एक वर्ष कहीं सिर छुपाने की जगह भी न मिली। वह इधर उधर भटकता रहा।

इस दुस्थिति में उसने भारत पर आक्रमण करना चाहा। जब वह एक गाँव

के मुखिया की पनाह में था, उसकी माता के मुँह उसने तैमूर के आक्रमण की कहानियाँ सुनीं। उसने भी अपने पुरखों की तरह भारत देश पर आक्रमण करने की ठानी।

इसलिए १५०४ में काबुल पर आक्रमण किया। उज्बेग राज्य में हो रहे विद्रोहों के कारण, उसे यह मौका मिल सका। १५१२ में उसने फिर समरकन्द पर आक्रमण किया, इस बार भी असफल रहा। यह देख कि वायव्य दिशा उसके लिए लाभप्रद न थी, आग्नेय दिशा की ओर उसकी नजर गई। भारत देश तक पहुँचने के लिए उसे १२ वर्ष और लगे। दिल्ली की हालत बुरी थी। कई ने, जो दिल्ली की गद्दी के लिए लड़ रहे थे, स्वयं बाबर को बुलाया।

इस निमन्त्रण के उत्तर में बाबर १५२४ में पंजाब आया और उसने लाहौर पर हमला किया, जब उसको निमन्त्रण देनेवालों को पता लगा कि वह उनकी सहायता के लिए नहीं आया था परन्तु भारत को जीतने आया था, तो वे उसका मुकाबला करने बढ़े। उसे काबुल वापिस जाना पड़ा।

बाबर ने बड़ी सेना इकट्ठी की। १३२५ नवम्बर में, उसने पंजाब पर हमला किया और वहाँ के सुल्तान दौलतखान लोदी को अपने वश में कर लिया। वहाँ से वह दिल्ली के नाम मात्र बादशाह इब्राहीम लोदी पर हमला करने के लिए २१ एप्रिल, १५२६ को निकला, पानीपत में उसका अफगान सेना से युद्ध हुआ। लोदी युद्ध तन्त्र बिल्कुल न जानता था। इसलिए १२ हजार बाबर की सेना ने, एक लाख अफगान सेना को घेर लिया और हरा दिया। बाबर ने तुरत दिल्ली और

आगरा को अपने काबू में कर लिया। तब भी उसकी विजय पूरी न हुई थी। राणा साँगा के नेतृत्व में राजपूत बड़े बलवान थे। मुगल सेना, युद्ध भूमि में राजपूतों को देखकर काँप उठी। बाबर को भी डर लगा कि वह उनको जीत न सकेगा। उसने अपनी छावनी में मदिरा पात्र तोड़ दिये। मदिरा फिकँवादी। अपने सैनिकों को उपदेश दिया, युद्ध करने के लिए उनसे शपथ करवायी।

१६ मार्च १५२७ में, आगरा के पश्चिम में खानुवा नामक ग्राम के पास दोनों का युद्ध हुआ। राजपूत हारे गये। राणा साँगा कुछ साथियों के साथ भाग गया और दो साल बाद मर गया।

बाबर आजीवन अफगानों से लड़ता रहा। उसका तीसरा मुख्य युद्ध, बिहार बेन्गाल के अफगानों के साथ था। ६ मई १५२९ में, गंगा के किनारे, नीचे, गोग्रा संगम के पास यह युद्ध हुआ और इस युद्ध में भी अफगान पराजित हुए। बाबर का स्थापित किया हुआ मुगल साम्राज्य तभी ओक्सस से गोग्रा नदी तक और हिमालय से ग्वालियर तक फैला हुआ था। उसके कुछ दिनों बाद, २६ दिसम्बर १५३० को आगरा में बाबर की मौत हो गई। मौत के बारे में एक कहानी बताई जाती है। कहते हैं, उसका लड़का हुमायूँ बीमार पड़ा। बाबर ने प्रार्थना की कि उसकी बीमारी उसे हो जाये और उसका लड़का ठीक हो जाये। उसके बाद, उसका लड़का तो ठीक हो गया। पर, दो-तीन महीने बाद, बाबर को काबुल ले जाकर, दफनाया गया।

नेहरू की कथा

[४]

मोतीलाल के घर में ब्रिटिश शासन के प्रति द्वेष था। ब्रिटिश लोगों ने चूँकि भारत की स्वतन्त्रता हर ली थी— इसलिए उनकी निन्दा की जानी चाहिए, यह भावना जवाहरलाल के मन में, बचपन से थी। इसलिए १८९९-१९०२ में जब ब्रिटिश और बोयर्स का युद्ध हुआ, तो उनकी सहानुभूति बोयर्स के साथ थी। बोयर्स दक्षिण आफ्रिका में रहनेवाले डच लोगों की सन्तान हैं। इस युद्ध के बारे में जानने के लिए उन्होंने पहिले पहल चाव से अखबार पढ़ने शुरु किये।

इसके बाद, १९०४-१९०५ में रूस और जापान में युद्ध हुआ। जवाहरलाल जी ने इस युद्ध के बारे में और भी दिलचस्पी दिखाई। जब जब यह खबर आती कि जापानवाले जीत गये हैं, तो उन्हें अत्यन्त खुशी होती। इसका कारण केवल यही था कि जापान एशिया का देश

और रूस यूरूप का एक देश था। जवाहरलालजी ने सोचा होगा कि जापान का रूस को पराजित करना, एशिया के लिए ही गर्व का कारण था। इसी उत्साह में उन्होंने जापान से सम्बन्धित कुछ पुस्तकें पढ़ीं, उन्होंने सपने देखे कि वे भी जापानी योद्धाओं की तरह, हाथ में तल्वार लेकर, भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ेंगे।

मोतीलाल ब्रिटिश विद्यालय पसन्द करते थे। उन्होंने जवाहरलाल को, किसी ब्रिटिश पब्लिक स्कूल में पढ़वाने का निश्चय

किया, सौभाग्यवश उनको हेरो में जगह भी मिली। तब जवाहरलाल की उम्र सोलह वर्ष थी। यह पब्लिक स्कूल में भरती होने की उम्र से कुछ अधिक थी।

१९०५ के मई महीने में, जवाहरलाल जहाज़ पर इन्लैण्ड के लिए रवाना हुए। उनके साथ उनके पिता, माता और चार वर्ष कि बहिन स्वरूप थीं। (यह स्वरूप वर्तमान बम्बाई की गवर्नर विजयलक्ष्मी पंडित ही हैं)

डोवर में, जहाज़ से उतरकर वे लन्डन जा रहे थे कि जवाहरलाल ने जब अखबार खरीद कर पढ़ा, तो पाया कि रुस जापान द्वारा हरा दिया गया था, वे तन्मय से हो गये।

हेरो के कम से कम चार विद्यार्थी पील, पामर्स्टन, बाल्डविन और चर्चिल ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री हो चुके थे। वहाँ पर पढ़ा उनका लड़का, भारत का प्रथम प्रधान मन्त्री बनेगा, अगर मोतीलाल नेहरू को मालूम होता, वे कितने सन्तुष्ट होते।

जवाहरलाल जब भरती हुए, तो हेरो के विद्यार्थियों में, बरोड़ा महाराजा के लड़के भी थे। उन्हें क्रिकेट का बड़ा शौक था। वे जवाहरलाल से बहुत ऊपर भी थे। कपूर्थला महाराजा के बड़े लड़के परंजीतसिंह (तिका साहेब) भी वहाँ आये। सब उनको चिढ़ाया करते। वे गुस्से में कहा करते—"तुम हमारे कपूर्थला आओ, तुम्हारी खबर लूँगा वहाँ।"

जवाहरलाल नेहरू ने शुरु-शुरु में वहाँ अकेलापन अनुभव किया। इससे पहिले नेहरू कभी अपरिचितों के बीच नहीं रहे थे। वे न किसी से बात करते, न कोई उनसे ही बात करता। पर ज़रूरत होने पर, वे पाँच-दस से मिलकर भी रहते। वे हेडमास्टर के घर ही रहते थे। होते-होते

उन्हें हेरो जीवन पसन्द आने लगा। जवाहरलाल नेहरू को यह देख आश्चर्य होता कि अंग्रेज़ों को सिवाय खेल और व्यायम के किसी चीज़ का शौक नहीं होता था। परन्तु वे स्वयं राजनीति में दिलचस्पी लेते। १९०५ में निर्वाचन में, लिबरल पार्टीवालों की जीत हुई। जब क्लास में पूछा गया कि कौन नये मन्त्री नियुक्त हुए थे, केवल जवाहरलाल नेहरू जवाब दे पाये।

ब्रिटिश अखबारों में भारत के बारे में खबरें नहीं छपती थीं। १९०६-१९०७ में, जो समाचार उन्होंने अपने देश के बारे में पढ़ा, उनसे उनके मन में काफी खलबली हुई। बेन्गाल, पंजाब, महाराष्ट्र में मुख्य घटनायें हो रही थीं। लाजपतराय और अजीतसिंह को काला पानी दे दिया गया था। बेन्गाल में अशान्ति थी। पूना से तिलक के बारे में खबरें आ रही थीं। स्वदेशी संग्राम और विदेशी बहिष्कार चल रहा था।

उन्हीं दिनों वायुयान भी आने लगे थे। राइट ब्रदर्स कई बार अपने बनाये वायुयान में उड़ चुके थे। उनका वायुयान आधा घंटा उड़कर, साढ़े चौबीस मील
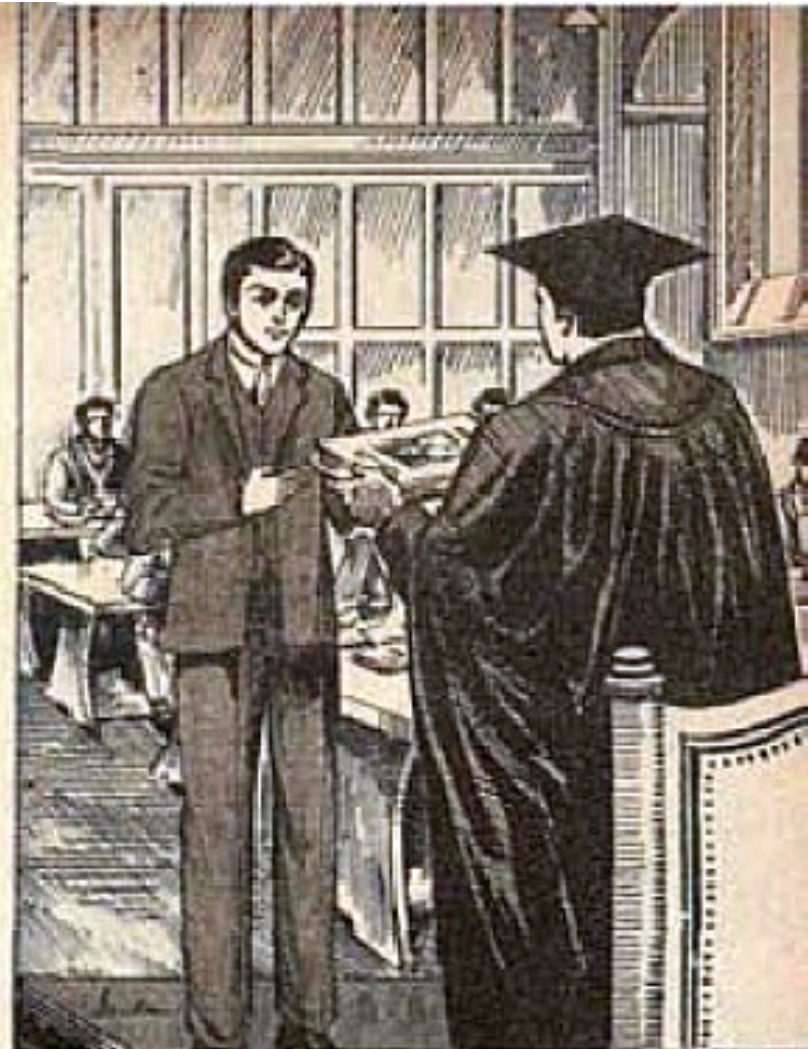
का फासला तय कर सका था। वह वायुयानों की आदि अवस्था थी। चूँकि जवाहरलाल नेहरू विज्ञान में दिलचस्पी रखते थे इसलिए इन चीज़ों ने उनको आकर्षित किया। उन्होंने अपने पिता को पत्र लिखा—"शायद वायुयान में मैं घर आऊँ!"

दो वर्ष बाद जवाहरलाल स्कूल से ऊब गये और यूनिवर्सिटी के लिए उतावले हो उठे—शायद इसका कारण उनकी मानसिक परिपक्वता ही थी। पढ़ाई में अच्छा होने के कारण, उनको स्कूल में एक पुस्तक

पुरुस्कार में मिली। गेरिवाल्डी, इटली की स्वाधीनता की योद्धा थे। उनके ग्रन्थ का अंग्रेज़ी अनुवाद तीन भागों में प्रकाशित हुआ था। उनमें से एक भाग ही नेहरू को ईनाम में दिया गया था। बाकी भाग स्वयं खरीद कर पढ़े। उन्होंने देखा कि भारत और इटली में कई समानतायें थीं।

जब जवाहरलाल नेहरू के मन में यों हलचल हो रही थी, तो भारत में स्वतन्त्रता संग्राम भी फैल रहा था। १८५७ के बाद यह पहिला संग्राम था। १९०५ में जब अंग्रेज़ों ने बंग विच्छेद किया, तो यह संग्राम और भी प्रज्वलित हो उठा। महाराष्ट्र में इसका नेतृत्व तिलक ने किया। १९०७ में वे उदास, निष्क्रिय कोन्ग्रस को अपने विचारों से प्रभावित करने में असफल रहे। उनके भाषण और "केसरी" में प्रकाशित लेख, बड़े ज़ोरदार रहते। गान्धी जी के आने से पहिले, वे ही राष्ट्रीय संघर्ष के अग्रगण्य नेता थे। १८९७ में ही वे जेल हो आये थे। बेन्गाल में, उत्तम वक्ता बिपिन चन्द्र पाल और केम्ब्रिज के पुराने विद्यार्थी अरविन्दघोष नेतृत्व कर रहे थे। न तिलक के अनुयायी न बेन्गाली ही अहिंसा के समर्थक थे।

इस परिस्थितियों में, जवाहरलाल नेहरू को हेरो, एक छोटा-सा कुँआ जान पड़ा। वेस्त केम्ब्रिज विश्वविद्यालय चले गये। उसके कुछ दिनों बाद, मानिकतला में, एक बोम्ब फेक्टरी पायी गई। मानिकतला षड्यन्त्र का मुकदमा चला। देश में, हो हल्ला हुआ। उस पर टिपण्णी करने के कारण, सरकार ने तिलक को ६ साल कारावास की सज़ा दी।

दुर्गेशनन्दिनी

[५]

[दुर्गेशनन्दिनी तिलोत्तमा से मानसिंह महाराजा का लड़का जगतसिंह जब शैलेश्वर मन्दिर में मिला तो उसने उसे बता दिया कि वह कौन था। परन्तु तिलोत्तमा के साथ आयी हुई विमला ने अपने मालकिन के बारे में बताने के लिए पन्द्रह दिन की अवधि माँगी। इस बार उसने दो बातें स्पष्ट रूप से जान लीं। एक, तिलोत्तमा युवराजा से प्रेम कर रही थी। दूसरी उन दोनों के विवाह के लिए दुर्गपति वीरेन्द्रसिंह नहीं मानेगा। फिर भी विमला अपने वचन को पूरा करने के लिए रात के समय शैलेश्वर मन्दिर की ओर निकल पड़ी।]

विमला मन्दिर में गई। दो मिनिट आराम करने के लिए बैठ गई। फिर उठकर शैलेश्वर के चरण छुए। इसके बाद युवराज के पास आकर, उसको नमस्कार किया।

कुछ देर तक दोनों सोचते रहे कि किस तरह बातचीत शुरु की जाये। परन्तु इन बातों में विमला बड़ी चतुर थी। उसने कहा—"युवराज! शैलेश्वर की कृपा से आज मुझे आपके दर्शन भाग्य मिले।"

श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

इतनी रात के समय जान हथेली में रखकर मैं यहाँ अकेली अकेली आयी। आपके दिखाई देने पर मन को कुछ हौसला हुआ।

"सब कुशल है न?" युवराज ने पूछा।

विमला ने यह जानने के लिए कि वह सचमुच तिलोत्तमा को चाहता था कि नहीं, "उस कुशल के लिए ही मैं शैलेश्वर को देखने आयी हूँ। मैं जान गई हूँ कि शैलेश्वर आपकी पूजा पर प्रसन्न हैं। मेरी पूजा की उन्हें परवाह ज़रा भी नहीं है। अगर आपकी अनुमति हो, तो मैं चली जाती हूँ।"

"तो चली जाओ, पर अकेली जाना ठीक नही है। मैं साथ आकर तुम्हें छोड़ आता हूँ।" जगतसिंह ने कहा।

"अकेले जाना क्यों ठीक नहीं है?" विमला ने पूछा।

"रास्ते में कोई भी आपत्ति आ सकती है!" युवराज ने कहा।

"तो, मैं मानसिंह महाराजा के पास जाकर कहूँगी, आपने जिनको सेनापति बनाकर भेजा है, उनके नीचे स्त्रियाँ कुशल नहीं हैं। वे शत्रुओं को भी काबू नहीं कर पा रहे हैं।"

युवराज ने हँसकर कहा—"देवताओं के ही शत्रु हैं, फिर क्या मनुष्यों के शत्रु नहीं होंगे? उदाहरण के लिए शिव को ही लो, जब वह तपस्या कर रहा था, तो उसने अपने शत्रु मन्मथ को भस्म कर दिया था। उस मन्मथ ने ही एक पखवारे पहिले उस शिव के मन्दिर में आकर उपद्रव-सा कर दिया।"

"उस उपद्रव के कौन शिकार हुए?"

"सेनापति ही...."

"महाराज, इस प्रकार की ऊँटपटाँग बातों पर कौन विश्वास करेगा?"

"मेरे पास गवाह हैं।"

"कौन हैं वह गवाह!"

"मेरे प्रेम की गवाह विमला ही है।" युवराज जगतसिंह ने कहा।

"जैसा कि आप सोच रहे हैं विमला गवाह नहीं होगी।"

"यह भी सम्भव है। हाँ, जो अपना वचन निभा न सके, वह भला गवाही कैसे देगी!" युवराज ने कहा।

"मैंने क्या वचन दिया था, ज़रा उसे स्मरण करें, यह मेरी प्रार्थना है।" विमला ने कहा।

"अपनी मालकिन का परिचय...."

बिमला ने गम्भीर होते हुए कहा—"युवराज, परिचय देते डर लग रहा है। उसके बारे में जानकर, हो सकता है कि आपको दुःख हो।"

जगतसिंह ने भी मज़ाक का लहजा छोड़कर कहा—"सचाई मालूम करके दुःखी होने का क्या कोई ठीक सबब है!"

"है...."

जगतसिंह ने सोचकर कहा—"चलो, जो हो, सो हो। बताओ तो। जो दर्द आजकल मुझे हो रहा है, उससे अधिक दर्द और किस बात से होगा! विमला, मैं तुमसे आज यूँहि नहीं मिला हूँ। पिछले पन्द्रह दिनों से मैं एक पल नहीं सोया हूँ।"

यह बात सुनने के लिए ही बिमला इधर उधर की बातें कर रही थी। परन्तु तब भी उससे असली बात न कहकर उसे बातों में लगाया रखा। आखिर जगतसिंह ने पूछा—"यह बताओ, तुम्हारी सहेली से मिलने के लिए कहाँ जाना होगा।"

"मन्धारण किले में जाना होगा। तिलोत्तमा बीरेन्द्रसिंह की लड़की है।" बिमला ने कहा।

यह सुनते ही जगतसिंह को लगा, जैसे उसे साँप ने काट दिया हो। उसके हाथ की तलवार नीचे गिर गई। उसने लम्बी साँस छोड़कर कहा—"तेरी बात सच है। तिलोत्तमा कभी भी मेरी नहीं हो सकती। मैं अभी युद्धभूमि में जाकर अपनी इच्छा को शत्रु के रक्त से धो देता हूँ।"

उसकी निराशा देख, बिमला ने कहा—"युवराज, यदि प्रेम का कोई प्रतिफल है, तो वह आप तिलोत्तमा को दे सकते हैं।"

यह सुन उसके मन में आशा अंकुरित हुई। उसने बिमला से कहा—"कुछ भी हो, आज मेरा मन कल्लोलित-सा है। मैं तुमसे एक बात कहता हूँ, करोगी? तुम जाकर अपनी सहेली से मेरे बारे में कहो। एक बार, केवल एक बार, मुझे क्या उसका दर्शन भाग्य दिलवा सकोगी।"

"इस बात के बारे में मेरी सहेली की क्या राय है, उसे कैसे आपको बताया जाय?" बिमला ने पूछा।

"बात बात पर तुम्हें तकलीफ देना मुझे पसन्द नहीं है। फिर भी यदि तुम एक बार फिर इस मन्दिर में मुझसे मिल सकी तो हमेशा तुम्हारा एहसान मानूँगा।
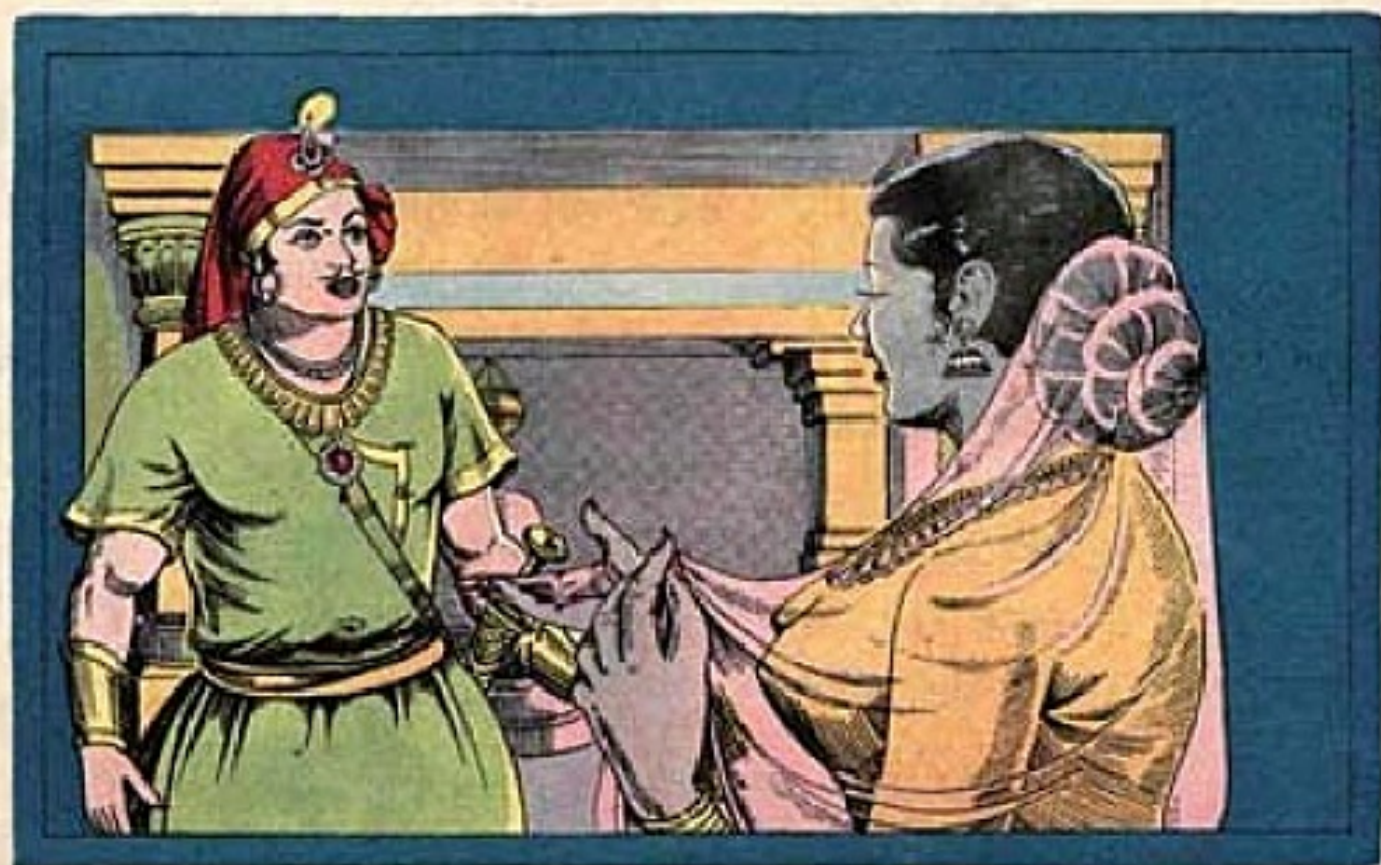
जगतसिंह से तुम्हें इसका प्रत्युपकार भी मिलेगा।"

विमला ने कहा कि यह काम उसके बस की बात नहीं थी। रास्ता बड़ा खतरनाक था। फिर लड़ाई का जमाना है। वचन दिया था, इसलिए चली आयी थी।"

"यदि तुम्हारा यह ख्याल है कि खतरा नहीं होगा तो तुम्हारे साथ मन्धारण किला आता हूँ। मैं एक जगह इन्तज़ार करता रहूँगा, तुम जाकर, तिलोत्तमा का जवाब लेते आना।" जगतसिंह ने कहा।

विमला ने सन्तुष्ट होकर कहा—"तो चलिए।" वे दोनों मन्दिर से बाहर आ रहे थे कि बाहर किसी की आहट सुनाई दी। जगतसिंह ने चकित होकर पूछा—"क्या कोई तुम्हारे साथ आया है!"

"नहीं तो...." उसने कहा।

"तो यह किसकी आहट है! मुझे ऐसा लगता है कि बाहर से किसी ने हमारी बातचीत सुनी है...." उसने चारों ओर देखा। परन्तु कोई न दिखाई दिया। उन दोनों ने शैलेश्वर को नमस्कार किया। फिर वे मन्धारण की ओर चले। रास्ते में युवराज ने

मैं परिचारिका नहीं हूँ। मुझे परिचारिका के रूप में रहना पड़ रहा है।"

यह जानकर कि यह बात उसे दुःख पहुँचा रही थी जगतसिंह ने कुछ न कहा। विमला ने स्वयं कहा—"मैं अपनी कहानी सुनाऊँगी, पर अभी नहीं।" यह क्या आहट हो रही है। लगता है, हमारे पीछे कोई आ रहा है।

पीछे से किसी के आने की ध्वनि आ रही थी। किसी का कानाफूसी करना भी सुनाई पड़ रहा था। तब वे मन्दिर से एक मील दूर आ गये थे।

"लगता है, कोई हमारा पीछा कर रहा है।" कहता जगतसिंह आगे बढ़ा। वे धीमे धीमे बातें करते करते जल्दी जल्दी चलने लगे। वे जब मन्धारण पहुँचे तो आधी रात हो चुकी थी। "इतनी रात के समय किले में कैसे जा सकोगी?" राजकुमार ने विमला से पूछा।

"ऐसा कोई डर नहीं है। यह सब देख-दाखकर ही मैं घर से निकली थी।" विमला ने कहा।

दोनों किले के पिछवाड़े के आम के बाग में गये।

कहा—"मुझे एक बात सूझ रही है, अगर कहता हूँ तो न मालूम तुम क्या सोचेगी?"

"क्या है वह?" विमला ने पूछा।

"मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम परिचारिका नहीं हो।"

"क्यों आपको यह सन्देह हो रहा है?"

"वीरेन्द्रसिंह की लड़की अम्बर राजा की बहू बन सकती है। इसका एक कारण है। यह परिचारिका के लिए जानना सम्भव नहीं है। तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

विमला ने लम्बी साँस लेकर दुःखी स्वर में कहा—"आपका सन्देह ठीक है।

"यह बाग भी निर्जन नहीं है। आप मेरे साथ किले में ही चले आइये।" विमला ने कहा।

जगतसिंह ने कुछ देर सोचकर कहा—"मेरा ऐसा करना ठीक नहीं है। दुर्गपति की आज्ञा के बिना, मैं दुर्ग में कैसे कदम रखूँ!" उसने कहा। अम्बर के राजकुमार का उस तरह दुर्ग में जाना, चोर के जाने की तरह था....उसने सोचा। "मैं आपको साथ जो ले जा रही हूँ।" विमला ने कहा।

"पर तुम्हें, मुझे दुर्ग में ले जाने का क्या अधिकार है? यह न सोचो कि मैं तुमको परिचारिका समझ कर यह बात पूछ रहा हूँ।" युवराजा ने कहा।

विमला ने कुछ देर सोचकर, पूछा—"क्या मेरे अधिकार बिना जाने, मेरे साथ नहीं आ सकते हैं?"

"नहीं आ सकता।" उसने कहा।

विमला ने उसके कान में कुछ कहा।

"चलो...." उसने कहा।

इतने में बाग के सूखे पत्तों पर किसी का चलना सुनाई दिया।

"फिर वही...." विमला ने कहा। "तुम थोड़ी देर यहाँ रहो, मैं देखकर आता हूँ।" वह तलवार निकालकर, उस जगह गया, जहाँ से ध्वनि आयी थी। उसे वहीं कोई नहीं दिखाई दिया। बाग की परवाह नहीं की गई थी, वह जंगल की तरह बढ़ गया था। उसमें कितने ही आदमी छुप सकते थे।

जगतसिंह तलवार हाथ में लेकर, एक पेड़ पर चढ़ा। जब उसने वहाँ से चारों ओर देखा, तो उसकी नज़र सबसे ऊँचे पेड़ पर टिकी। उस पर दो आदमी छुपे हुए थे। चान्दनी में केवल उनकी पगड़ियाँ

ही दिखाई दे रही थीं। उसने उस पेड़ को ख्याल में रखा। पेड़ से उतरकर, विमला के पास आया और जो कुछ देखा था, उसे बताया। "अगर अभी दो भाले मिल जायें, तो अच्छा हो।"

"क्यों?" विमला ने पूछा।

"यह जानने के लिए कि वे कौन हैं। मुझे कुछ सन्देह हो रहा है। पगड़ियाँ देखकर, ऐसा लगता है कि दुष्ट पठान हमारा पीछा कर रहे हैं।" जगतसिंह ने कहा।

तुरत विमला को रास्ते में देखे, घोड़े की लाश और पगड़ियाँ आदि याद हो आयीं। "आप यहीं ठहरिये, मैं किले में जाकर, भाले आदि ले आती हूँ।" विमला ने जल्दी से दुर्ग के गुप्त द्वार को अपनी चाबी से खोला। अन्दर गई। गुप्त द्वार बन्द करके, आयुधागार में गई। वहाँ नियुक्त कर्मचारी से कहा—"मुझे दो भाले चाहिए, अभी दे दूँगी...."

"उनसे आपको क्या काम?" उस कर्मचारी ने पूछा।

"आज वीर पंचमी है। वीर माता बनने के लिए व्रत कर रही हूँ। किसी से न कहना।" विमला ने कहा।

उसके दिये हुए दो भाले लेकर, वह जल्दी जल्दी युवराज के पास गई। परन्तु जल्दी में वह गुप्त द्वार में ताला लगाना भूल गई। इस कारण बड़ी आपत्ति आ पड़ी।

बाहर खड़ा सशस्त्र व्यक्ति, द्वार को खुला देख, उसमें से किले में घुस गया। कहीं कोई जगा हुआ न था। वह आदमी सीधे अन्तःपुर तक चला गया।

[अभी है]

कर्म परिपाक

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा, वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, इस वक्त बेवक्त में तुम्हें शव को ढोता देख तो यही लगता है कि अभी तक तुम्हारा कर्म पका नहीं है। तुम्हारी तरह धनगुप्त ने भी, मोक्ष के लिए कितने ही मौके मिलने पर भी कर्म के न पकने से कई हीन जन्म लिए। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, उस धनगुप्त की कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

धनगुप्त काशी में व्यापार किया करता था। व्यापार में चूँकि वह चतुर था, इसलिए उसने खूब रुपया बनाया। धनार्जन

बेताल कथाएँ

के साथ, धनगुप्त में दैवभक्ति और धर्म परायणता आदि भी थीं। हमेशा गरीबों को दान दिया करता। योगियों और सन्यासियों का आतिथ्य किया करता। उसके तीन लड़के थे।

एक दिन मानसरोवर से दयानन्द नाम का एक सिद्ध पुरुष धनगुप्त के पास आया। धनगुप्त ने भक्तिपूर्वक उसकी पादपूजा की, उसका आतिथ्य किया। उसकी भक्ति और आदर को देख, सिद्ध ने धनगुप्त को एकान्त में बुलाकर पूछा—"क्या तुम्हें मोक्ष का मार्ग बताऊँ?"

धनगुप्त ने सिद्ध को अपनी कृतज्ञता जताते हुए कहा—"मुझे और क्या चाहिए स्वामी! परन्तु अभी मेरे लड़के छोटे हैं, पाँच वर्ष में वे अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे। तब आप मुझे मोक्ष मार्ग बताना।" सिद्ध ने कहा—"अच्छा, तो वैसा ही सही।" कहकर वह अपने रास्ते चला गया।

इसके छः महीने के बाद धनगुप्त को कोई हृदय व्याधि हुई और वह मर गया। चूँकि उसके बच्चे छोटे थे, वे व्यापार के गुर भी न जानते थे, मदद के नाम से पाँच दस लोगों ने मिलमिलाकर उनका धन लूट लिया। जब व्यापार खतम हो गया, तो धनगुप्त के लड़के दो बैल खरीदकर खेती करने लगे। खेती में उनका कुछ फायदा हुआ। जैसे तैसे वे गुजारा करने लगे।

जब पाँच साल बीत गये, तो धनगुप्त के कहे अनुसार सिद्ध दयानन्द फिर आया। जब उसे मालूम हुआ कि धनगुप्त मर गया था, तो वह वापिस जाने के लिए तैयार हो गया, जब वह बाहर जा रहा था, तो उसकी नजर पशुशाला की ओर

गई, वहाँ उसने एक बैल को देखा। उसके पास जाकर उसने उस पर अपने कमण्डल से पानी छिड़का। "क्यों बेटा, क्या अब तुम्हें मोक्ष मार्ग बताऊँ?"

उस बैल ने मनुष्य की भाषा में कहा—"स्वामी। पाँच साल और ठहरिये। मेरे न होने के कारण मेरे लड़कों ने व्यापार में नुक्सान उठाया, अब उन्होंने खेती शुरु की है। मेरी मदद के कारण अब उनको खेती में कुछ फायदा हो रहा है। यदि पाँच साल और मदद की तो वे अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे।"

"अच्छा, तो वैसा ही हो।" कहकर सिद्ध चला गया।

सिद्ध के चले जाने के बाद उस बैल को कोई बीमारी हुई और वह मर गया। उसके बाद धनगुप्त के लड़कों को खेती में भी नुक्सान होने लगा। परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बदलीं कि वे अपना खेत और घर भी खो बैठे और गाँव के एक छोर पर, एक झोंपड़ा बनाकर उसमें रहते मज़दूरी करते कराते जीवन निर्वाह करने लगे।

फिर पाँच वर्ष बाद सिद्ध बैल के रूप में धनगुप्त को खोजता आया। उसे
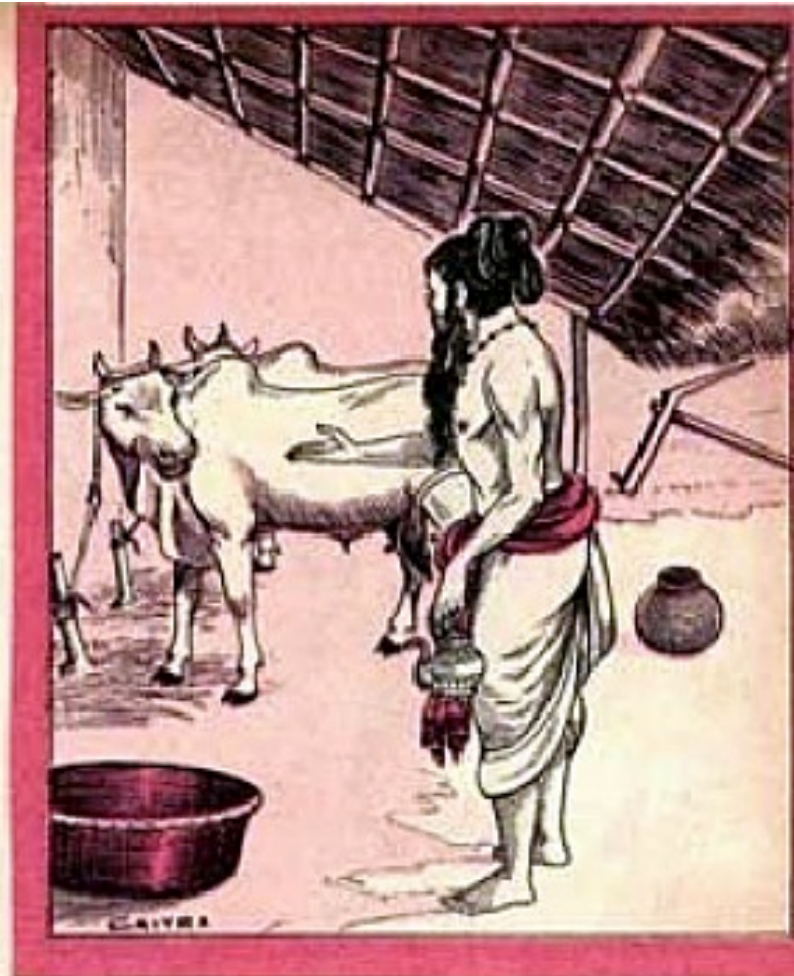
मालूम हुआ कि धनगुप्त के लड़के गाँव से बाहर झोंपड़ों में रह रहे थे। जब वह वहाँ पहुँचा, तो एक कुत्ता भोंकता, भोंकता उसके ऊपर कूदा।

सिद्ध ने अपने कमण्डल में से पानी छिड़का। फिर पूछा—"क्यों बेटा! कम से कम मोक्ष का मार्ग अब तो सीखो।"

"पाँच और साल ठहरिये। मेरे लड़के मज़दूरी कर कराकर, कुछ जमा कर पाये हैं। ताकि भिखारी और चोर वगैरह न आ जायें, इसलिए मैं घर की रखवाली करता हूँ। यदि पाँच वर्ष यूँ काट दिये, तो वे
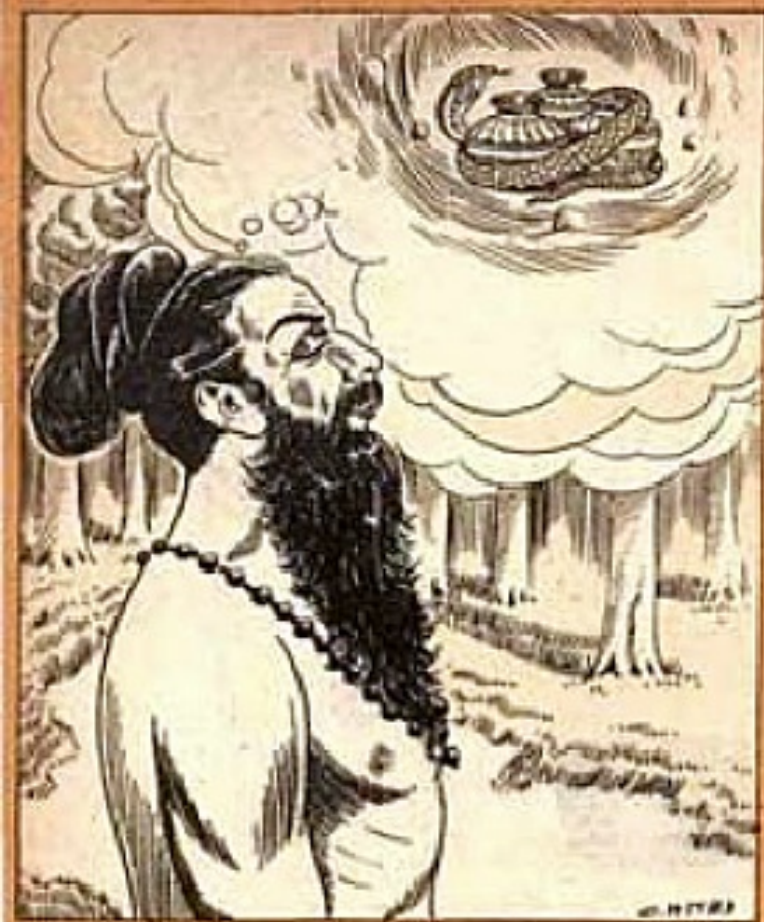
फिर अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे।" कुत्ते ने मनुष्यों की भाषा में कहा।

"अच्छा, तो वैसा ही करो।" कहकर सिद्ध चला गया।

कुछ दिनों बाद वह कुत्ता मर गया। धनगुप्त के लड़के बिल्कुल निकम्मे हो गये थे।

पाँच वर्ष खतम होते ही सिद्ध फिर उनके पास आया। जब कुत्ते के बारे में पूछताछ की तो पता लगा कि वह चार पाँच वर्ष पूर्व मर मरा गया था।

सिद्ध ने जब अपनी दिव्य दृष्टि इधर उधर दौड़ायी, तो उसने देखा कि भूमि के अन्दर धनगुप्त सर्प के रूप में धन के कलशों से चिपका हुआ था।

उसने धनगुप्त के लड़कों से कहा—"बेटा, मैं तुम्हें ऐसी जगह दिखाऊँगा, जहाँ तुम धन के कलश देख सकोगे। क्या उन्हें खोद खादकर लाओगे?"

"और क्या चाहिए!" धनगुप्त के तीनों लड़के तीन फावड़े लेकर, सिद्ध के साथ गये और जहाँ उन्होंने खोदने के लिए कहा, वहाँ खोदा। वहाँ धन के कलश मिले। पर उनको लपेटे एक साँप फुँकार रहा था। तुरत तीनों ने उस पर तीन चोट मारी।

सिद्ध ने उन्हें रोका। साँप को पूरी तरह मरने न दिया। उस पर अपने कमण्डल में से पानी छिड़ककर कहा—"बेटा! क्या अब मोक्ष मार्ग बताऊँ?"

साँप ने मुश्किल से सिर उठाकर मनुष्यों की भाषा में कहा—"जल्दी बताइये स्वामी। सिद्ध ने उसके कान में कोई रहस्य बताया। सब सुनकर साँप ने सिर झुकाकर प्राण छोड़ दिये। धनगुप्त के लड़के वह धन ले गये। फिर ज़मीन जायदाद खरीदकर आराम से रहने लगे।

CHITRA

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। साँप से कुत्ते का जन्म, कुत्ते से पशु का जन्म, पशु से मानव जन्म अच्छा है न। अच्छे जन्मों में भी वह मोक्ष नहीं पाना चाहता था, साँप जन्म में मोक्ष के लिए क्यों वह छटपटाने लगा! क्या उसको डर था कि उससे निम्न जन्म लेने पड़ेंगे! या उसने सोचा था कि धन के मिलने पर उसके लड़कों को उसकी मदद की ज़रूरत न थी! यदि इन सन्देहों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"धनगुप्त के मन के बदल जाने का कारण, उसका हीन जन्म लेने का भय नहीं था। यह भी कारण न था कि आगे उसके लड़कों को उसके संरक्षण की आवश्यकता न थी, पुत्रों के प्रति प्रेम ने ही उसको मोक्ष पाने के लिए प्रेरित नहीं किया था। इस प्रेम के कारण, कुत्ते का जन्म पाकर भी, वह चिन्तित न था और संरक्षण के बारे में जितनी ज्यादह मदद करता, वह उतनी ही उनकी स्थिति बिगड़ती गई थी, बिल्कुल सुधरी नहीं न थी। धनगुप्त में परिवर्तन का कारण पुत्रों के प्रति मोह का जाना ही था। इसके कारण थे, उनके उस पर लगाये हुए चोट।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर सवार हो गया।

[जे. युगन्धर शर्मा की कहानी के आधार पर]

मृग - मन्त्र

एक गाँव में एक बड़ा गरीब रहा करता था। उसे रोजी का भी कोई रास्ता न था। जगह-जगह वह घूमा, उसे कहीं काम न मिला। यह सोच कि बालिश्त पेट के लिए इतनी मुसीबतें उठाने से तो यही अच्छा है कि बैरागी बना जाये। वह बैरागी बन गया। बैरागी वेश में, वह एक ग्राम से दूसरे ग्राम जाता-जाता दुपहरी में, एक पेड़ के नीचे बैठा था कि भीम नाम के एक गरीब ने उसे देखकर, उसके पाँव पकड़ कर साष्टाङ्ग किया। "क्या चाहते हो भाई!" बैरागी ने भीम से पूछा।

"आप सिद्ध हैं और मैं बेरोजगार गरीब हूँ। मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। मैं आपके साथ आऊँगा। आप जैसे लोगों की सेवा करने से इह और परलोक दोनों अच्छे बनेंगे।" भीम ने कहा।

यह सुन बैरागी को डर लगा—उसने सोचा मैं खुद ही अपना पेट पाल नहीं पा रहा हूँ, फिर शिष्य का बोझ क्यों ऊपर से! इस शिष्य से कैसे छुटकारा पाया जाय! वह यह सोचता, इधर उधर देख रहा था कि उसने पाया कि कुछ दूरी पर एक हरिण, एक पेड़ से अपना शरीर रगड़ रहा था। उसने भीम को वह हरिण दिखाकर पूछा—"वह क्या कर रहा है?"

"अपना शरीर पेड़ पर रगड़ रहा है।" भीम ने कहा।

"मुझे मालूम है, तू क्यों रगड़ रहा है—मुझे मालूम है, तू क्यों रगड़ रहा है। यह तुम तीन बार कहना।" बैरागी ने कहा।

जयराम

"मुझे मालूम है, तुम कहाँ जा रहे हो ! यह तीन बार कहो ।" बैरागी ने कहा । भीम ने तीन बार कहा ।

"यह हरिण मन्त्र है। यह तुम कुछ समय तक जपते रहे तो, तुम्हें सब प्रकार की सम्पत्ति शीघ्र ही मिल जायेगी ! यह मृग-मन्त्र, जिसे मैंने किसी को भी न दिया है, तुम्हें दिया है। अब तुम जाओ।" बैरागी ने कहा। भीम भक्तिपूर्वक बैरागी को साष्टाङ्ग करके बिदा लेकर, मृग-मन्त्र जपता, एक शहर में पहुँचा।

उस नगर के राजा के, बहुत दिनों बाद एक लड़का हुआ था। यह देख, मन्त्री को ऐसा लगा, जैसे उसका साँस ही रुक गया हो—क्योंकि वह इस आशा में था कि अगर राजा निस्सन्तान रहा, तो वह स्वयं राजा हो सकेगा। वह इसकी तैयारी भी कर रहा था। जब तक राजा जीवित था, उसके हाथ में ही शासन की बाग डोर रहती ही, उसके मरने पर वह स्वयं आसानी से राजा बन सकता था। राजा के लड़का पैदा होने से उसकी इस आशा पर पानी फिर गया। जब तक राजा मरेगा, तब तक एक और राजा बढ़कर

"मुझे मालूम है, तू क्यों रगड़ रहा है।" भीम ने तीन बार कहा। "वह अब क्या कर रहा है?" बैरागी ने पूछा।

"हमारी ओर देख रहा है।" भीम ने कहा।

"मुझे मालूम है, तुम क्या देख रहे हो, यह तीन बार कहो!" बैरागी ने कहा। भीम ने वैसे ही कहा।

"अब वह क्या कर रहा है?" बैरागी ने पूछा।

"पेड़ के नीचे से चला जा रहा है।" भीम ने कहा।

तैयार हो जायेगा। इसलिए राजकुमार जब छोटा था, तभी ही यदि राजा को गद्दी पर से उतार दिया गया, तो काफ़ी समय तक राज्य उसके ही आधीन रहेगा।

मन्त्री ने राजा के नाई को बुलाकर कहा—"अरे, तुम राजा की हजामत बनाते-बनाते, उनका गला काट देना, मैं तुम्हें बड़ी जागीर दूँगा।"

नाई ने डरकर कहा—"अगर पकड़ा गया, तो फाँसी पर लटका दिया जाऊँगा।"

"राजा के चले जाने के बाद मेरा ही तो अधिकार होगा। कौन तुम्हें फाँसी पर चढ़ायेगा! चाहो तो, तुम्हें अभय पत्र लिखकर दे देता हूँ।" मन्त्री ने कहा। मन्त्री से अभय पत्र लेकर, जागीर के लालच में नाई राजा का सिर काटने के लिए तैयार हो गया और अगले दिन राजमहल के चबूतरे पर बैठा, बैठा, उस्तरा रगड़ रगड़ कर तेज करने लगा।

ठीक उसी समय भीम मृगमन्त्र जपता, "मुझे मालूम है, तुम क्यों रगड़ रहे हो! मुझे मालूम है, तुम क्यों रगड़ रहे हो! मुझे मालूम है, तुम क्यों रगड़ रहे हो!" उस तरफ़ आया। नाई, भीम की यह बात सुनकर डर गया। वह उसकी ओर देखने लगा। "मुझे मालूम है, तुम क्या देख रहे हो! मुझे मालूम है, तुम क्या देख रहे हो! मुझे मालूम है, तुम क्या देख रहे हो!" भीम ने कहा।

नाई का दिल धड़ धड़ करने लगा। वह उस्तरे को रखकर, थैला लेकर जाने के लिए तैयार हुआ। "मुझे मालूम है, तुम क्यों जा रहे हो! मुझे मालूम है, तुम क्यों जा रहे हो! मुझे मालूम है, तुम क्यों जा रहे हो!" भीम ने कहा। नाई वहाँ से सिर पर पैर रखकर भागा।

दाढ़ी बनवाने के लिए राजा बाहर आया और नाई को भागता देख; उसने उसे पकड़कर लाने की आज्ञा दी।

मृग मन्त्र के जपन में मस्त भीम यह सब भगदौड़ देखकर मन्त्र जपना भूल गया और उन्हें देखता खड़ा रहा। उसने देखा कि कोई भागा जा रहा था और सिपाही उसका पीछा कर रहे थे। भीम ने जानना चाहा कि जो भागा जा रहा था, उसने चोरी की थी, या कुछ और किया था।

राजमहल के सामने भीड़ जमा हो गई। नाई ने राजा के पैर पकड़कर रोते हुए मन्त्री की चाल बता दी। मन्त्री के दिये हुए अभय पत्र को भी दिखाया। फिर उसने कहा—"महाराज, आज न जाने सवेरे मैंने किसका मुँह देखा था, इस आदमी ने मेरा रहस्य मालूम कर लिया था। इसलिए राजद्रोह करते करते मैं बच गया।"

नाई ने भीड़ में खड़े भीम को पहिचान कर कहा—"इस महात्मा ने ही मेरी चाल जान ली थी।"

राजा ने जब भीम से बहुत पूछताछ की, तो असलियत मालूम हो गई। भीम को नाई की योजना के बारे में कुछ भी न मालूम था। उसने केवल मृग मन्त्र ही पढ़ा था। बस।

राजा ने उस मन्त्री को फाँसी की सजा दी जिसने राजद्रोह की सोची थी। मृग मन्त्र से भीम ने चूँकि उसकी प्राण रक्षा की थी, उसको बड़ी जागीर दी। उसे अपने यहाँ ही नौकरी पर रख लिया। मृग मन्त्र ने उसकी सब समस्याओं को हल कर दिया।

साँप दुल्हा

शरान देश के राजा के बच्चे न थे।

राजा एक लड़के के लिए, रानी एक लड़की के लिए तपस्या करने निकले। एक दिन रानी दुःखी हो अपने बाग के परे, पेड़ों में टहल रही थी कि एक सूखे पेड़ के नीचे, बैठे बिना दान्तवाली एक बुढ़िया ने पूछा—"क्यों, महारानी। क्यों दुःखी हो?" रानी ने अपने दुःख का कारण उस बुढ़िया को बता दिया।

"यदि तुम बच्चे चाहती हो, तो जैसा मैं कहूँ, वैसा करो। आज सूर्यास्त होते ही अपने बाग में ईशान्य दिशा की ओर ज़मीन पर एक सोने की कटोरी उलट कर रख दो। कल सूर्योदय के समय कटोरी उठाकर देखो। उसके नीचे एक छोटा-सा पौधा दिखाई देगा। उसकी दो टहनियाँ होंगी, एक पर सफेद फूल और दूसरे पर लाल फूल होगा। यदि तुमने सफेद फूल की पंखुड़ियाँ खायीं, तो लड़का होगा, लाल फूल की पंखुड़ियाँ खायीं, तो लड़की पैदा होगी। दोनों फूलों की पंखुड़ियाँ मत खाना।"

रानी ने लड़के की आस में जैसा बुढ़िया ने कहा था, वैसा ही किया। अगले दिन जब कटोरी उठाकर देखी, तो उसके नीचे एक पौधा था और उस पर दो फूल लगे थे। यद्यपि वह स्वयं लड़की चाहती थी, पर पति के आनन्द के लिए लड़का पाने की इच्छा से सफेद फूल की पंखुड़ियाँ खा गई। परन्तु उसने लाल फूल भी छोड़ना न चाहा। वह उसकी पंखुड़ियाँ भी खा गई।

फिर रानी गर्भवती हुई। राजमहल में सब खुश थे। नौ महीनों के पूरे होते ही

एक दिन रानी को प्रसव वेदना होनी शुरु हुई। उस हालत में उनके गर्भ से एक साँप निकला। रानी भय के कारण पसीना पसीना हो गई। इससे पहिले कि वह किसी को बुला सकी, वह साँप रेंगता-रेंगता कहीं चला गया। रानी की वेदना बढ़ी और उसने एक लड़के को जन्म दिया। सब ने सोचा कि रानी ने उस लड़के को ही जन्म दिया था।

कई साल बीत गये। राजकुमार बढ़ता बढ़ता सयाना हो गया। राजा ने अपने लड़के से कहा—"बेटा, अब तुम विवाह के योग्य हो गये हो—तुम जैसी पत्नी चाहो वैसे खोजकर, शादी कर लो।"

राजकुमार अपने नौकर-चाकरों के साथ देशाटन के लिए निकल पड़ा। वह कुछ दूर गया ही था कि एक बड़े पेड़ की टहनी पर एक बड़ा साँप लटका लटका, उसका रास्ता रोक कर, फुँकारने लगा। राजकुमार का घोड़ा बिदक उठा। राजकुमार मुश्किल से गिरते-गिरते बचा।

"अरे, मेरे विवाह के बाद ही तेरा विवाह होगा।" उस सर्प ने मनुष्यों की भाषा में कहा। राजकुमार घबरा गया।

वह अपने आदमियों के साथ वापिस लौट गया। उसने पिता से, जो कुछ साँप ने कहा था, कहा।

राजा ने सब सुनकर, अपने सिपाहियों को बुलाकर कहा—"तुम सब जाकर, उस मनहूस साँप को मार आओ।"

रानी घबराई। उसने राजा को रोका। उस बुढ़िया ने जो कुछ कहा था, वह सब बताकर, कहा—"वह साँप हमारा बड़ा लड़का है। बिना पहिले उसकी शादी किये, छोटे की शादी कैसे की जा सकती है?"

"अरे भाई, यह भी क्या आफत है!" सोचकर, राजा ने एक दूर देश के राजा को खबर भेजी कि वह उसकी लड़की को अपनी बहू बनायेगा।

क्योंकि सब का यही ख्याल था कि उस राजा के एक ही लड़का था, इसलिए सहर्ष वह अपनी लड़की देने के लिए मान गया। उसे भेज भी दिया। साँप का उस राजकुमारी से विवाह करके, उन्हें कमरे में भेजा गया। उस दिन रात को साँप राजकुमारी की पोषाक को छोड़कर, सब कुछ निगल गया। यह

देख, राजा सिर पीटने लगा और साँप कहीं चला गया।

अगले दिन राजकुमार कन्यान्वेषण के लिए फिर निकला। इस बार भी साँप ने उसे रोक कर कहा—"अरे भाई, मेरे विवाह के बाद ही तुम्हारा विवाह होगा।" यह सोच, न मालूम, कितनी राजकुमारियों को वह निगलेगा राजा पगला-सा गया। उसने एक किसान के पास जाकर कहा—"तुम्हारी दो लड़कियाँ हैं यदि तुमने अपनी एक लड़की की, मेरे लड़के से शादी की, तो मैं तुम्हें धनी बना दूँगा।"

"लड़के का मतलब साँप ही है न, महाराज! मुझे धन नहीं चाहिए, मुझे ऐसे ही जीने दीजिए।" किसान ने कहा। साँप ही बात छुपाये भी न छुपी।

पर जब राजा जिद पकड़े, तो विचारा किसान कर भी क्या सकता है! किसान के बड़ी लड़की की साँप से शादी निश्चित हो गई। अगले दिन ही मुहूर्त था।

किसान की लड़की दुःखी हो, उस दिन शाम को टहल रही थी—एक सूखे पेड़ के नीचे एक बुढ़िया बैठी थी, उसने पूछा—"क्यों बेटी, क्यों इतनी दुखी हो?"

किसान की लड़की ने बुढ़िया से सब कुछ कह दिया।

जैसे मैं कहूँ, यदि तुमने वैसा किया, तो तुम्हारी आपत्ति टल जायेगी। जब तुम्हें राजा अपनी बहू बनाये, तो तुम कुछ शर्त रखो। कहो कि एक के ऊपर एक, तुम्हें दस रेशमी लहँगे पहिनाये जायें। फिर अपने कमरे में चूने के पानी से भरा पीपा रखवाओ। एक और पीपे में दूध, उसके साथ दस बेंत भी रखवाओ। यदि ये शर्त पूरी न हो, तो विवाह वेदिका पर बैठने से इनकार कर देना। विवाह के बाद तुम्हें और उस साँप को कमरे में भेजेंगे। साँप तुम्हें लहँगा खोलने के लिए कहेगा। तब कहना कि जब तक वह केंचुली नहीं छोड़ेगा तब तक न खोलूँगी, जब जब वह यह कहे, तब तब तुम भी यह कहते जाना। साँप के सात आठ केंचुलियों से अधिक नहीं होते। जब वह और केंचुली न छोड़ सके, तब तुम बेंत ले लेना। उसे चूने के पानी में भिगोकर, साँप को बुरी तरह धुन दो। जब एक बेंत टूट जाये, तो दूसरी ले लेना। जब वह एक सिरे से दूसरे

सिरे तक केवल माँस का लोथड़ा हो जाये तो देखना क्या होता है!

किसान की लड़की ने, जैसा बुढ़िया ने कहा था, वैसा ही किया। जैसा बुढ़िया ने कहा था, वैसा ही हुआ। कमरे में आते ही साँप ने ज़ोर से फुँकरा। "लहँगा खोलो।" उसने किसान की लड़की से कहा।

"तुम पहिले केंचुली छोड़ो।" किसान की लड़की ने कहा। साँप ने उसे इस तरह देखा, जैसे वह उसे निगल ही जायेगा। परन्तु साँप ने जैसे तैसे छटपटाकर, एक केंचुली छोड़ दी।

किसान की लड़की ने एक लहँगा उतार कर, केंचुली पर रख दिया।

सात आठ केंचुलियों के बाद, साँप बहुत प्रयत्न करने पर भी केंचुली न छोड़ पाया। उस हालत में चूने के पानी में भीगे बेंत से साँप को पीटा। साँप दर्द के कारण तड़पने लगा। जब वह हिलडुल न सका, तो उसने उसे उठाकर दूध के पीपे में डाल दिया। तुरत अंगड़ाई लेता, मन्मथ-सा एक नवयुवक दूध के पीपे में खड़ा हो गया। वह गिरने को था कि किसान की लड़की उसको सहारा देकर, पलंग के पास लायी। वह उस पर गिर पड़ा और खूब देर तक सोया।

अगले दिन राजधानी में किसान की लड़की ने जो काम किया था, उसके बारे में सब को मालूम हो गया। राजा ने अपने बड़े लड़के और उसकी पत्नी का राज्याभिषेक किया। राजा का दूसरा लड़का अपनी भाभी से बड़ी पत्नी न चाहता था। इसलिए उसने किसान की दूसरी लड़की से शादी कर ली। सब सुख से रहने लगे।

अशोकदत्त - विजयदत्त

कालिन्दी के किनारे एक अग्रहार में गोविन्दस्वामी नाम का एक सुब्राह्मण रहा करता था। उसके दो लड़के थे। अशोकदत्त और विजयदत्त।

एक बार, उस इलाके में अकाल पड़ा। गोविन्दस्वामी के पास अपने खाने के लिए तो था पर किसी को देने के लिए नहीं था। किन्तु जब उसने अपने बन्धुओं को अकाल में भूखा मरते देखा तो उसे बड़ा दुख हुआ। कितनों की सहायता कर सकता था! इसलिए, जो कुछ पास था, वह सब बन्धुओं को देकर स्वयं, पत्नी और पुत्रों को लेकर काशी नगर में रहने के लिए निकल पड़ा।

वे सब काशी नगर के बाहर चण्डिकालय में पहुँचे। गोविन्दस्वामी ने वहाँ देवी पूजा की और शाम को, एक पेड़ के नीचे विश्राम किया। उसकी तरह और भी बहुत से यात्री उस पेड़ के नीचे जमा हो गये। रात होते ही, पत्ते बत्ते बिछाकर, यात्री अपनी थकान मिटाने के लिए सो गये।

रात के समय, गोविन्दस्वामी का छोटा पुत्र शीतज्वर से काँपने लगा। वह बुखार सह न सका, पिता को उठाकर कहा— "पिताजी मैं ठंड के मारे मरा जा रहा हूँ। क्या सेंकने के लिए थोड़ी आग बना दोगे?"

"अरे, ईन्धन भी ले आयें, तो आग कहाँ है?" पिता ने पूछा।

"वह आग क्या दिखाई दे रही है?" लड़के ने पूछा।

"वह आग नहीं बेटा, शव जल रहा है।" पिता ने कहा।

की। वह टूट गयी और उसमें से कोई द्रव निकलकर, लड़के के मुँह पर पड़ गया।

तुरत लड़के की आकृति बदल गई। उसकी आकृति भयंकर राक्षस की सी हो गई। बाल खड़े हो गये। हाथ में तलवार थी। मुख में बड़े बड़े दान्त थे। जब वह तलवार लेकर, गोविन्दस्वामी को मारने दौड़ा, तो तुरत आवाज़ सुनाई दी—"कपालस्फोटा! मत मारो, मत मारो, वह तुम्हारा पिता है। इधर आ जाओ।" तुरत वह राक्षस अन्तर्धान हो गया।

गोविन्दस्वामी—"अरे, बेटा, विजयदत्त कहाँ चले गये तुम!" वह रोता पेड़ के नीचे गया। सवेरे होते ही, उसने अपनी पत्नी और बड़े लड़के को, जो कुछ गुज़रा था, बताया। सब विजयदत्त के लिए दुखी होने लगे। यह बात, बाकी यात्रियों को भी मालम हो गई। उन्होंने गोविन्दस्वामी के परिवार को आश्वासन दिया। उन में समुद्रदत्त नाम का एक व्यापारी था। उसने गोविन्दस्वामी के कुटुम्ब के प्रति सहानुभूति दिखाई और काशी में अपने घर वह उनको ले गया। उसने उनके रहने की व्यवस्था वहीं कर दी।

"वहाँ, पिशाच होंगे।" पिता ने कहा।

"पिशाच मेरा क्या बिगाड़ेंगे, पिताजी मुझे ले चलिये।" विजयदत्त ने कहा।

गोविन्दस्वामी और कुछ कर भी नहीं सकता था। वह लड़के को चिता के पास ले गया। जल्दी ही, लड़के की ठंडक जाती रही। उसने चिता की लपटों में कोई गोल-सी चीज़ को जलते हुए दिखाकर कहा—"वह क्या है पिताजी!" "वह आदमी की खोपड़ी है।" उसने कहा।

विजयदत्त ने एक जलती लकड़ी ली और उससे उसने जलती खोपड़ी पर चोट

२

कई वर्ष बीत गये। गोविन्दस्वामी का लड़का और विद्याओं के साथ मल्ल विद्या में भी उत्तीर्ण हो गया। वह नवयुवक बन गया। उसका बल बड़ा असाधारण था।

एक उत्सव आया। काशी के राजा प्रताप मुकट ने, भिन्न भिन्न देशों से मल्ल बुलवाये। उनमें कुश्तियों का इन्तज़ाम किया। दक्षिण देश से आये हुए एक पहलवान ने बाकी पहलवानों को हरा दिया। तब समुद्रगुप्त ने कहा कि उसके पास एक बलवान लड़का था और वह दक्षिण देश के इस पहलवान को जीत सकता था। राजा ने अशोकदत्त को बुलवाया। दक्षिण देश के पहलवान से उसकी कुश्ती करवाई। अशोकदत्त ने पहलवान को हरा दिया। प्रेक्षकों ने ज़ोर से हर्ष ध्वनि की। राजा ने अशोकदत्त के पराक्रम की प्रशंसा की तथा उसे रत्न ईनाम में दिये और अपना अंगरक्षक नियुक्त किया।

थोड़ा समय बीता। एक बार रात को, राजा कहीं जाकर, श्मशान के रास्ते घर आ रहा था, तो किसी का "प्यास, प्यास" कराहना सुनाई दिया।

राजा ने तरस खाकर "जाओ, उसे कोई पानी दो।" परन्तु उस समय श्मशान में, किसी को भी जाने का साहस न था। अशोकदत्त इसके लिए मान गया। वह पानी लेकर, श्मशान में गया था कि राजा नौकर चाकर के साथ नगर चला गया।

अन्धेरी रात थी। शवों के जलने से जो रोशनी हो रही थी, वही रोशनी थी। अशोकदत्त उस अन्धेरे में टटोलता टटोलता आगे जा रहा था। वह ज़ोर से चिल्लाया—"किसने पानी माँगा था!" "मैंने" जवाब मिला। अशोक, उस दिशा

की ओर गया, जहाँ से ध्वनि आयी थी। उसने सामने एक पुरुष को देखा, जिसको सूली पर चढ़ा दिया गया था और पास ही नीचे एक सुन्दर स्त्री को देखा। उसने बढ़िया गहने भी पहिन रखे थे।

"तुम कौन हो? क्यों यहाँ बैठी बैठी रो रही हो।" अशोकदत्त ने पूछा।

"मैं इस आदमी की पत्नी हूँ। यदि मेरे पति के प्राण चले गये, तो उसके साथ चिता में जल जाने की सोच रही हूँ और यह मर नहीं रहा है, प्यास प्यास चिल्ला रहा है। पानी तो ले आयी पर वह इतना ऊपर है कि उस तक पानी पहुँचा नहीं पायी हूँ।" उस स्त्री ने कहा।

"यह लो पानी लाया हूँ—मेरी पीठ पर चढ़कर यह पानी अपने पति को पिलाओ।" कहकर, अशोकदत्त उसे पानी देकर, झुक गया। वह स्त्री, उसकी पीठ पर चढ़ गई। थोड़ी देर में अपने ऊपर और ज़मीन पर खून गिरते हुए देखकर अशोकदत्त ने सिर जो ऊपर उठाया, तो पाया कि वह स्त्री सूली पर चढ़े मनुष्य का माँस काट रही थी।

यह सोच कि वह कोई पिशाचिनी थी। उसे ज़मीन पर पटक कर, मारने के उद्देश्य से, उसने पैर पकड़ लिये। इतने में वह आकाश में उड़ गई और अन्तर्धान हो गई। अशोकदत्त के हाथ उसके पाँव का नूपुर मात्र रह गया।

उस विचित्र अनुभव पर वह आश्चर्य कर रहा था। वह नूपुर लेकर घर गया। अगले दिन स्नान करके, राजा के पास जाकर, नूपुर दिखाकर जो कुछ हुआ था, उसने कह सुनाया।

राजा की अशोकदत्त के बारे में राय पहिले ही अच्छी थी, अब वह और

अच्छी हो गई। उसने अन्तःपुर में जाकर, रानी को वह नूपुर देकर उसे बताया वह कैसे मिला था। दोनों ने अशोकदत्त की बड़ी प्रशंसा की। आखिर राजा ने कहा—"यह अशोकदत्त युवक है। अच्छे परिवार में पैदा हुआ है। बड़ा पराक्रमी है। सुन्दर है। क्या अपनी लड़की अनंगलेखा को इससे अच्छा पति मिलेगा?"

तब रानी ने सच बात बताई—"राजकुमारी अनंगलेखा अशोकदत्त से बहुत दिन से प्रेम कर रही थी। उसने उसको इस बारे में बताया भी था।"

तब से वह अपने पति से यह कहने के लिए मौका देख रही थी। इतने में राजा ने स्वयं यह बात कह दी।

राजा को यह जानकर खुशी हुई। उसने अशोकदत्त का अपनी लड़की से विवाह कर दिया।

३

एक दिन रानी ने अपने पति से, अशोकदत्त के लाये हुए नूपुर को दिखाकर कहा। यह एक है, इसलिए फिजूल है। इसकी जोड़ी का एक और बनवाइये।"

राजा ने सुनारों को बुलाकर, उस नूपुर को दिखाकर, उसकी जोड़ी का एक और बनाने के लिए कहा। उन्होंने नूपुर को परखकर कहा—"यह कारीगरी इस दुनियाँ में नहीं हो सकती। इसमें जो मणियाँ जड़ी गई हैं, वे भी यहाँ नहीं मिल सकती हैं। यह जहाँ मिला है इसका जोड़ी का एक और वहीं मिल सकेगा। खोज करवाइये।"

यह सुन, राजा और रानी निरुत्तर से हो गये। यह देख अशोकदत्त ने कहा—"इसकी जोड़ी का नूपुर मैं लाने की कोशिश करूँगा।"

यह सोच कि कहीं, जमाई कोई दुस्साहस न कर बैठे, राजा ने कहा—"कोई बात नहीं, अगर इसकी जोड़ी का नूपुर नहीं मिलता है।" परन्तु अशोकदत्त ने उसकी एक न सुनी।

वह नूपुर उसे, शायद, चतुर्दशी के रात श्मशान में मिला था। अशोकदत्त फिर उसी दिन श्मशान गया पर वह स्त्री उसे दिखाई न दी। उसे पकड़ने के लिए, एक पेड़ से लटकते हुए शव को लेकर "नरमाँस नरमाँस" चिल्लाता, श्मशान में घूमने लगा।

कहीं से कोई स्त्री उसके पास आयी। "मेरे साथ आओ।" उसने कहा। वह उसके साथ गया। एक बट के नीचे, एक अप्सरा-सी स्त्री दासियों के बीच बैठी थी। उसने उसे देखकर पूछा—"नरमाँस कितने में दोगे?"

अशोकदत्त ने नूपुर दिखाते हुए कहा—"यदि इस तरह का नूपुर दिया, तो नरमाँस दूँगा।"

उसने हँसकर कहा—"मेरे पास ठीक वैसा ही नूपुर है—जो तुम्हारे हाथ में है, वह मेरे पैर का ही है। चूँकि मैंने वेश

बदल रखा है, इसलिए तुम मुझे पहिचान नहीं पाये हो। मुझे नरमाँस तो नहीं चाहिए—जैसा मैं कहूँ, यदि वैसा किया, तो दूसरा नूपुर भी दे दूँगी।"

"कहो, अभी किये देता हूँ।" अशोकदत्त ने कहा।

"हिमालय में त्रिघंट नाम का एक नगर है। वहाँ एक महावीर राक्षस रहा करता था। मैं उसकी पत्नी हूँ। मेरी एक लड़की है। हमारे राजा कपालस्फोट से युद्ध करते मेरे पति गुज़र गये। इसके बाद हमारे राजा ने वह नगर मुझे दे

दिया। लड़की के सयानी होते ही उचित वर के लिए मैं खोज करने लगी। उस दिन राजा के साथ तुम्हें देखकर, तुमको अपनी लड़की के लिए उचित वर समझा— माया करके, पानी के लिए तुम्हें श्मशान में बुलाया। फिर श्मशान में बुलाने के लिए ही मैंने तुम्हारे हाथ में अपना नूपुर रहने दिया था। जैसे मैंने सोचा था, वैसे तुम वापिस आ भी गये। हमारे घर आकर मेरी लड़की से शादी करो।"

वचन दे दिया था, इसलिए अशोकदत्त उस राक्षस स्त्री के साथ इच्छा मार्ग से त्रिघंट गया। विद्युत्प्रभा नामक राक्षस कन्या से उसने शादी की। वहाँ ससुराल में कुछ दिन रहकर उसने अपनी सास से कहा—"मुझे वह दूसरा नूपुर भी दे दो। राजा मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।" उसने उसको दूसरे नूपुर के साथ एक सोने का कमल भी दिया।

फिर उसने काशी नगर के बाहर के श्मशान में पहुँचाकर कहा—"मैं हमेशा बहुल चतुर्दशी की रात को यहाँ आऊँगी। उस दिन रात को मैं यहाँ अवश्य दिखाई दूँगी।"

अशोकदत्त उससे विदा लेकर अपने घर गया। अपने माँ-बाप को, जो यह सोच कर दुखी हो रहे थे कि छोटे के साथ बड़ा भी चला गया था, उसने आश्वस्त किया। राजा को जब मालूम हुआ कि जमाई वापिस आ गया था, तो वह भागा भागा उसके पास गया। पाँव छूते जमाई को उठाकर, आलिंगन करके वह बड़ा खुश हुआ। फिर अशोकदत्त राजा के साथ महल में गया। उसने हिमालय से लाया हुआ नूपुर और कमल राजा को दे दिये। जो कुछ हुआ था, उसे सुनकर राजा और रानी और सब लोग बड़े चकित हुए। जमाई के स्वागत में राजा ने मंगलवाद्य के साथ उत्सव मनाया।

राजा ने दो देवालय बनाकर, उनके लिए चान्दी के कलशों का प्रबन्ध कर रखा था, अशोकदत्त के सोने का कमल लाते ही राजा ने उस कमल को देवालय के कलश के ऊपर लगवाया। सफेद कलश के ऊपर लाल कमल बड़ा सुन्दर लग रहा था।

"और अगर एक और सोने का कमल हो तो कितना अच्छा हो। दूसरे

कलश पर भी इसी तरह रखो।" राजा ने कहा।

"महाराजा, आज्ञा कीजिए। एक और कमल ले आऊँगा।" अशोकदत्त ने कहा।

राजा का दिल बैठ-सा गया। "मुझे एक और कमल चाहिए ही नहीं, नहीं।"

पर अशोकदत्त ने हठ न छोड़ा। वह एक और कमल लाना चाहता था। वह बड़े जोश में था। जैसे तैसे उसने उस जोश को काबू में किया। कुछ दिन हुए। फिर बहुल चतुर्दशी आयी। रात हुई। अन्धेरा हो गया। आधी रात के समय जब राजकुमारी सो रही थी अशोकदत्त धीरे-धीरे घर से निकलकर, श्मशान में पहुँच गया।

उसी वट के नीचे उसकी राक्षस सास बैठी इन्तज़ार कर रही थी, उसे देखते ही वह उठी। अपने माया के प्रभाव से उसे साथ लेकर, हिमायल की चोटी पर अपने नगर को ले गयी। उसने यह भी जानने की कोशिश न की कि वह किस काम पर आया था। राक्षसी की लड़की, पति को आते देखकर बड़ी खुश हुई। अशोकदत्त ने अपनी दूसरी पत्नी के साथ कुछ दिन आराम से काटे फिर उसने अपनी सास से कहा—"मुझे एक और सोने का कमल चाहिए।"

"मेरे पास एक और कहाँ है बेटा! एक ही था उसे मैंने तुम्हें दे दिया। मेरे पति पर गर्व करके खुश होकर हमारे राजा कपालस्फोट ने एक ही दिया था, हमारे राजा का एक तालाब है। उसमें सब इसी तरह के कमल हैं। पर उन्हें कोई छू नहीं सकता।" सास ने कहा।

"कहाँ है वह तालाब बताओ—मैं स्वयं सोने का कमल ले जाऊँगा।" अशोकदत्त ने कहा।

"क्या यह कर सकोगे? उस तालाब की रक्षा, भयंकर राक्षस रात दिन करते हैं।" सास ने कहा।

उसके बहुत कहने पर भी अशोकदत्त ने ज़िद पकड़ी कि वह उसे देख कर ही रहेगा। आखिर सास ने उसको दूरी से, वह तालाब दिखाया। वह तालाब एक पहाड़ की चोटी पर था। ताकि पानी बह न जाये इसलिए उसमें कमल भरे पड़े थे। अशोकदत्त ने, उस तालाब में आकर, एक कमल तोड़ना ही चाहा था कि भयंकर राक्षसों ने उसे रोका।

अशोकदत्त तलवार लेकर उनसे भिड़ पड़ा। कुछ को मार दिया। कुछ भाग गये और उन्होंने जाकर अपने प्रभु कपाल स्फोट से कहा। यह सुनकर कपालस्फोट स्वयं वहाँ आया।

उसको कुछ दूरी पर देख, अशोकदत्त ने चकित हो कर कहा—"यह क्या! हमारा बड़ा भाई अशोकदत्त यहाँ कैसे आया?" उसने अपने हाथ के हथियार

दूर फेंक दिये। आनन्दाश्रु बहाता, अशोकदत्त के पैरों पर गिरा।

"यह क्या है? कौन हो तुम?" अशोकदत्त ने पूछा।

"मैं तुम्हारा भाई हूँ। विजयदत्त हूँ। हम गोविन्दस्वामी के लड़के हैं। विधिवश मैं यों राक्षस बन गया हूँ। चिता में जलते कपाल को चूँकि मैंने तोड़ दिया था, इसलिए मेरा नाम कपालस्फोट पड़ा। अब तक मुझे अपना पूर्व वृत्तान्त नहीं याद था। पर तुम्हें देखते ही, सब याद हो आया। मेरा राक्षसत्व भी चला गया है।" विजयदत्त

ने कहा। दोनों ने आलिंगन किया और आनन्दाश्रु बहाये।

फिर वे दोनों मिलकर अशोकदत्त के ससुराल गये। अशोकदत्त ने अपनी राक्षसी सास से, अपने भाई के बारे में बताकर कहा—"हम दोनों, अब अपने माँ बाप के यहाँ चले जायेंगे। सालों पहिले मेरा भाई चला गया था, उसे देखकर वे बड़े सन्तुष्ट होंगे। मैं इस बार अपनी पत्नी को भी साथ ले जाऊँगा।"

राक्षसी सास, अपनी माया शक्ति से, अपनी लड़की, दामाद और उसके भाई को काशी नगर से बाहर छोड़ आई। वहाँ से वे सब अपने माँ बाप के पास गये।

विजयदत्त को फिर से देखकर, विजयदत्त के माता पिता को जो खुशी हुई, उसकी कोई हद न थी। उसके साथ अड़ोस-पड़ोस के लोग भी विजयदत्त की कहानी सुनकर आश्चर्य चकित हुए और आनन्दित भी। प्रताप मुकट महाराजा को यह मालूम होते ही कि दामाद वापिस आ गया है, वह भागा भागा आया। वह भी अशोकदत्त और विजयदत्त की कहानी सुनकर पुलकित हुआ। वह अपने दामाद को अपने घर ले गया। राजकुमारी भी यह देख बड़ी खुश हुई कि उसका पति सक्षेम वापिस आ गया था।

राजा को बहुत से सोने के कमल मिल गये। दूसरे देवालय के कलश पर भी उन्होंने एक सोने का कमल रखा। शेष, उसने ईश्वर को अर्पित कर दिये।

विजयदत्त भी राजा की नौकरी में लग गया। अशोकदत्त अपनी दोनों पत्नियों के साथ सुखपूर्वक समय व्यतीत करने लगा।

जादूगरनी मल्ली

एक गाँव में एक गरीब पति-पत्नी रहा करते थे। उनके बच्चे न थे। उनके घर के बगल में एक बड़े मकान में जादूगरनी मल्ली रहा करती थी।

एक दिन गरीब पत्नी ने पति से जादूगरनी मल्ली के अहाते के पेड़ से आम लाने के लिए कहा। वह फल तोड़ ही रहा था कि मल्ली ने उसे पकड़कर कहा—"यदि तुमने अपने होनेवाले बच्चे को मुझे दिया, तो मैं छोड़ दूँगी।"

गरीब मान गया। उनके जो लड़की हुई, जिसका नाम उन्होंने गौरी रखा, उसने मल्ली को दे दी।

मल्ली ने गौरी को एक ऐसे बुर्ज में रखकर, पाला पोसा, जिसमें सीढ़ियाँ न थीं। गौरी बड़ी हुई।
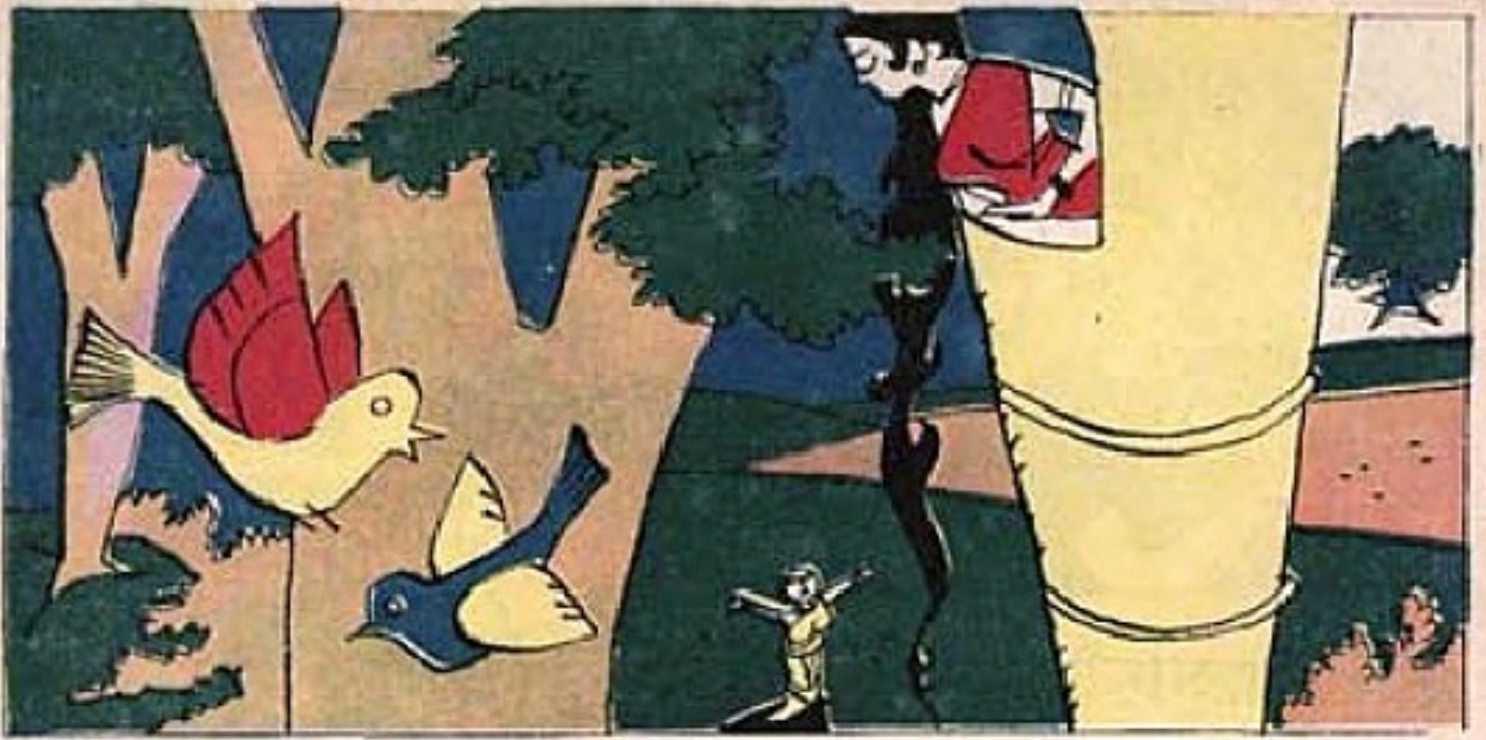
जादूगरनी मखी रोज किसी न किसी काम पर बाहर जाती और गाती "गौरी अपने केश तो नीचे लटकाओ।" गौरी ऊपर से अपने लम्बे बाल छोड़ देती, उनके सहारे बुढ़िया ऊपर बुर्ज पर चली जाती।

उस देश के राजकुमार ने एक दिन यह देखा। जादूगरनी को बाहर गया देख, राजकुमार वहाँ आया। उसने भी कहा—"गौरी, अपने केश तो लटकाओ।" गौरी ने राजकुमार को देखकर अपने बाल लटका दिये और उनके सहारे उसे ऊपर आने दिया। दोनों में प्रेम हो गया और उन्होंने मिलकर भाग जाना चाहा। राजकुमार ने बुर्ज से उतरने के लिए रस्सियाँ बनाई।

ठीक समय पर जादूगरनी मक्खी आई और उसने राजकुमार को अन्धा कर दिया। कुएं पर जाकर, गौरी के बाल काट दिये और उसे जंगल में छोड़ दिया।

जब अन्धा होकर, राजकुमार इधर उधर भटक रहा था, उसे जंगल में से किसी का दुःख भरा गीत सुनाई दिया। वह उस तरफ दौड़ा। गौरी ने अपने प्रियतम को पास बुलाकर आँसू बहाये। आँसू ज्योंहि राजकुमार की आँखों में पड़े, त्योंहि उसे दीखने लगा।

गौरी राजकुमार से विवाह करके, सुख से रहने लगी। उसके गरीब माँ-बाप के आनन्द की सीमा न थी।

स्वर्गारोहण

अंगिरस ने सदेह स्वर्ग जाना चाहा।

ऐसी कोई इच्छा नहीं है, जो यज्ञ द्वारा मनुष्यों के लिए सम्भव न हो। इसलिए उसने सोचा कि यह इच्छा भी किसी न किसी यज्ञ द्वारा अवश्य पूरी होगी। परन्तु वह उस यज्ञ का विधान न जानता था। वह केवल देवता ही जानते थे।

चूँकि मनुष्यों की इच्छायें देवता पूरी कर सकते हैं और देवताओं का राजा इन्द्र है, इसलिए उसने इन्द्र के लिए तपस्या की। जल्दी ही इन्द्र प्रत्यक्ष हुआ और उसने पूछा—"क्या चाहते हो!"

अंगीरस ने इन्द्र से पूछा—"सदेह स्वर्ग में पहुँचने के किए किस प्रकार का यज्ञ करना चाहिए!" इन्द्र ने यज्ञ के बारे में तो बताया ही, साथ ही उसके लिए आवश्यक मन्त्र भी बताया।

फिर इन्द्र ने अंगीरस से कहा—"तुम यह रहस्य मुझ से जान सके—इसके लिए मैं तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ। यदि तुम्हारे द्वारा और भी मनुष्य यह जान सकें, तो मैं सन्तुष्ट होऊँगा। यह मनुष्यों के लिए सुलभ-साध्य यज्ञ नहीं है। उदार बुद्धिवाले ही इसमें सफल हो सकते हैं। यदि उस प्रकार के कुछ लोग सदेह स्वर्ग पहुँच सकें, तो स्वर्ग की कोई हानि न होगी।" कहकर इन्द्र अन्तर्धान हो गया।

परन्तु अंगीरस उदार बुद्धि का न था। ईर्ष्यालु था। उसने सोचा कि सदेह स्वर्ग पहुँचने का मन्त्र क्योंकि उसने ही प्राप्त

किया था—इसलिए उससे औरों का लाभ नहीं होना चाहिए। इस यज्ञ के बारे में औरों को मालूम भी नहीं होना चाहिए। यदि और भी उसकी तरह सदेह स्वर्ग जा सके, तो उसकी क्या विशेषता होगी!

इसलिए वह समुद्र के किनारे एक निर्जन प्रदेश को चुनकर, वहाँ यज्ञ करने लगा। ताकि भूमि की तरफ से कोई आ न जाये, उसने कुछ दूरी पर अपने व्यक्ति नियुक्त किये। यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री एकत्रित कर, यज्ञ आरम्भ कर दिया।

यज्ञ के आरम्भ में जो कुछ दान करने थे, वे सब उसने अपने शिष्यों को ही दे दिये। इस यज्ञ का फल क्या होगा, वे शिष्य भी न जानते थे। शिष्य जब इस बारे में पूछते, तो वह कहा करता—"यज्ञ का फल तुम अपनी आँखों से देखोगे। उसे जाकर, तुम संसार में बताना। समझे।"

इस यज्ञ में घी में सनी पुरोडाश की आहुति देनी होती है। अंगीरस जैसे-जैसे एक एक पुरोडाश की आहुति देता जाता, वैसे-वैसे अग्नि और धुँआ आकाश में और ज़ोर से और ऊँचे उठते। इस धुँये में एक चमकता विमान नीचे उतरता दिखाई दिया। यज्ञ जब खतम होने लगा, तो वह भूमि के पास आने लगा। अभी एक पुरोडाश की आहुति डालनी थी, उसी प्रकार विमान को भी थोड़ा नीचे आना था।

ठीक उसी समय एक बाधा आ पहुँची। आस-पास के मुनियों ने जब आकाश में धुँआ देखा, तो वे जान गये कि कोई यज्ञ कर रहा था। यज्ञ के स्थल पर मुनि यथेच्छ आ जा सकते हैं, यज्ञ शेष का

उपयोग कर सकते हैं। उसके लिए निमन्त्रण की जरूरत नहीं है। इसलिए सब तरफ़ से मुनि सोत्साह यज्ञ स्थल पर आये। उन मुनियों को दूरी पर ही देख, शिष्यों ने चिल्लाकर गुरुओं को बताया—"मुनि आ रहे हैं।"

"उन्हें मत आने दो, जाने के लिए कह दो।" उसने शिष्यों से कहा। परन्तु इस गड़बड़ी में उसने पुरोडाश के एक तरफ़ ही घी लगाकर होम में छोड़ दी, इसके साथ वह मन्त्र जपना भी भूल गया। उसने अपनी गलती तो नहीं जानी, परन्तु उछल कर, उसने विमान का एक किनारा पकड़ लिया। विमान कुछ ऊपर उठा और फिर वहाँ भँवर की तरह घूमने लगा।

विमान में बैठे देवता ने यज्ञ करते हुए अंगीरस से कहा—"यज्ञ पूरा नहीं हुआ है, इस कारण तुम विमान में नहीं बैठ सकते!"

"यज्ञ विधि मैंने पूरी कर दी है, मुझे इसमें बिठा लो।" अंगीरस ने देवता से कहा।

इस बीच अन्तिम पुरोडाश के धुँये में से एक भूत निकला। वह भूत विमान

के चारों ओर मँड़रा रहा था। नीचे एकत्रित मुनियों ने उससे पूछा—"तुम कौन हो!" वह बिना जवाब दिये, ऊपर जाने लगा। इन्द्र और बृहस्पति पर ध्यान केन्द्रित करके, मुनियों ने उस भूत को नीचे आने के लिए कहा। वह नहीं आया। जब अग्नि पर ध्यान केन्द्रित किया गया, तो वह आ गया।

"मैं पुरोडाश हूँ। अग्नि के लिए पैदा हुआ हूँ। मुझे मन्त्र के साथ यथा विधि अग्नि में आहुति दीजिए। चूँकि अंगीरस ने वह नहीं किया था, इसलिए यह रूप धारण करना पड़ा है। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, मुझे कम से कम अभी ही सविधि होम में डालिये।"

पर वे मन्त्र न जानते थे। विमान को पकड़े पकड़े लटके लटके अंगीरस ने उनसे कहा—"मुनियों, मैंने सदेह स्वर्ग जाने की इच्छा से यह यज्ञ किया था। जल्दी में मैंने पुरोडाश को गलत डाल दिया। उसके दोनों ओर घी डालकर, जो मन्त्र मैं बताऊँ उसे पढ़कर, उसकी आहुति कर दो।"

उन्होंने वैसे ही उस भूत की आहुति दी। अग्नि ज्वालायें ऊपर उठने लगीं। विमान के देवता ने कहा—"अंगीरस, तुम्हारा यज्ञ भंग हो गया है। तुम सदेह स्वर्ग नहीं जा सकते। दिव्य देह लाओ।"

अंगीरस यज्ञकुण्ड में कूद पड़ा और और दिव्य देह से स्वर्ग पहुँचा।

अंगीरस के संकुचित बुद्धि के कारण भूमिवासियों को सदेह स्वर्ग जाने का ज्ञान न मिल सका।

हों, पर दृश्य वस्तु एक ही दिखाई देती है।"

अब पहिले प्रश्न के बारे में सोचें। राजा ने जो हँस भेजने के लिए कहा था, वह तुम ही हो। मैंने माँगे कि नहीं कि तुम चार हजार मुहरें ले आये। "यानि तुम्हारे पास अभी कुछ बाकी है। यदि सचा हँस न निकला, तो सब पंख उखाड़कर एक निशानी के लिए छोड़ फिर आपके पास भेज दूँगा।" अब इसका मतलब समझ ही गये होगे। यह प्रश्नोत्तर उसी के बारे में थे। यह सोच शौचमित्र का मुँह लटक-सा गया। वह सीधे राजा के दर्शन के लिए निकला। "प्रभु! मैं सब कुछ जान गया हूँ। मेरी आँखें खुल गई हैं। आप कृपया, मन्त्री पद ले लीजिये। मैं इसके योग्य नहीं है।" शौचमित्र ने कहा। समस्याओंके बारे में जो उत्तर आया था, उसे बताकर, उसने क्षमा माँगी।

"जब इतना मालूम कर लिया है, तो यह क्यों नहीं मालूम किया कि वह वृद्ध कौन है!" धर्मदत्त ने पूछा।

"नहीं....तो...." शौचमित्र ने कहा।

"वह भी एक समस्या है। उसने कहा था कि वह इसी पेशे से ज़िन्दगी बसर करता था। वह पेशा बुद्धि बल ही है, मन्त्री के लिए बुद्धि बल ही मुख्य है। वह तुम्हारे लिए मन्त्री पद छोड़कर जानेवाला धीमन्त ही है। इस प्रश्न का जवाब चूँकि मैंने दिया है, इसलिए जो हजार मुहरें उसके यहाँ बचाई थीं, वह मुझे मिलनी चाहिए न!" कहता राजा हँसा।

"हाँ, प्रभु! जरूर दूँगा। इस धन से मैंने एक अमूल्य पाठ सीख लिया है।" शौचमित्र ने कहा।

परीक्षा

सिन्धु देश का मलयकेतु नाम का महाराजा था। उसकी एक पुत्री थी वनयमुखी। वह अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थी। उससे विवाह करने के लिए कई राजकुमार आये, पर वे राजकुमारी की परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सके इस परीक्षा के बारे में हर कोई जान गया।

राजकुमारी यह परीक्षा इसलिए ले रही थी ताकि वह धैर्यवान, वीर और उत्तम वर पा सके। उसने जो कोई आया, उसकी परीक्षा नहीं ली, जब वह उनकी उम्र और सौन्दर्य के बारे में जान जाती, तभी यह परीक्षा लेती।

परीक्षा इस प्रकार थी। राजमहल के उत्तर में एक बाग और उसके उत्तर में एक छोटा-सा जंगल था। जो कोई उससे विवाह करना चाहता था, उसको उस वन में से होते हुए राजमहल आना होता था। वन में एक शेर था। उसे निश्शस्त्र हो जीत कर, बाग में घुसना पड़ना था। उस बाग में भयंकर पक्षी था। वह किसी को देखता, तो आकर वह उसकी दोनों आँखें निकाल देता। यदि उससे भी बचकर, राजमहल की ओर कोई आता, तो बाग और महल के बीच में कीचड़वाली एक खन्दक थी। यदि उसको पार करके कोई आता, तो राजकुमारी स्वयं अपने हाथों से लोटा-भर पानी देती। उस पानी से सारा कीचड़ धोना पड़ता। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले व्यक्ति से ही वह विवाह करेगी।

उससे विवाह करने के लिए जो कोई आये, उनमें से कई शेर द्वारा मारे

गये। जो कोई शेर से बच जाते, भयंकर पक्षी उनकी आँखें निकाल देता। यदि शेर और पक्षी से कोई बचकर, कीचड़ में से कोई आ भी जाता, तो एक लोटे-भर पानी से वह कैसे अपने सारे शरीर को धोकर साफ़ कर सकता था!

इस असम्भव परीक्षा के बारे में नगावली के राजकुमार प्रताप ने भी सुना। सिन्धु देश की राजधानी में आया। राजमहल के उत्तर के वन का एक बार चक्कर काट आया, वन के चारों ओर बाड़ थी। उस बाड़ में एक द्वार था, केवल इसलिए ही नहीं कि चारों ओर बाड़ थी परन्तु इसलिए भी कि वह राजमहल के इतने समीप था, उसने अनुमान किया कि वन कृत्रिम था, इसलिए उसने अनुमान लगा लिया कि शेर भी मनुष्यों द्वारा पाला गया होगा।

फिर प्रताप ने राजकुमारी को देखा। वह उसको परीक्षा देने के लिए मान गई, चूँकि वह युवक था और सुन्दर भी। उसने मनुष्य के आकार का एक कवच बनवाया। उसको पहिनने से, सभी कुछ आँख, नाक, आदि, सब मनुष्य के से लगते थे। वह

लोहे का बना था। उस कवच को बगल में रखकर, हाथ में माँस की पोटली लेकर, प्रताप, उत्तर द्वार से अरण्य में घुसा।

उन में वह कुछ दूर गया था कि एक शेर गरजता आया। उसने अपने पास की माँस की पोटली उसके सामने फेंक दी और कवच पहिनकर आगे बढ़ा। शेर माँस खाने में इतना मस्त हो गया था कि उसने उसकी ओर देखा ही नहीं।

प्रताप वन में से होकर बाग में गया, तो वहाँ उसे भयंकर पक्षी दिखाई दिया। पक्षी कवच की आँखें निकाल कर चला गया। उसने कवच दूर फेंक दिया। बाग और राजमहल के बीच कीचड़ है, यह देख वह खन्दक में उतर कर राजमहल में पहुँचा।

राजकुमारी लोटा-भर पानी लेकर, खड़ी थी। तब प्रताप ने राजकुमारी से कहा—"मैं इस परीक्षा के दो भागों में उत्तीर्ण हो चुका हूँ। अब तीसरे भाग में उत्तीर्ण कराने की जिम्मेवारी तुम पर है।"

"इस लोटे-भर पानी से, सारे शरीर का कीचड़ तुम्हें ही तो धोना है।" राजकुमारी ने कहा।

"हाँ, वैसे ही करूँगा। पर पानी उड़ेलने का काम तुम्हारा है। सम्भलकर, एक बून्द पानी भी नीचे न गिरे। अगर कोई बून्द गिरी, तो एक एक बून्द के लिए एक एक घड़ा पानी देना होगा।" उसने राजकुमारी से कहा।

"परीक्षा में तुम उत्तीर्ण हुए। चलो, नहा लेना।" राजकुमारी ने कहा। फिर उन दोनों का वैभवपूर्वक विवाह हुआ।

धर्मनिधि

पन्नालाल के गाँव के मुखिया ने अपने घर के अहाते में कुँआ खुदवाने के लिए एक जानकार आदमी को बुलाकर पूछा—"क्यों, यहाँ अच्छा पानी निकलेगा।"

उस आदमी ने जगह देखकर कहा—"अरे, आप पानी की बात कर रहे हैं। यहाँ चार गज़ नीचे एक खजाना है। परन्तु वह आसानी से नहीं मिलेगा। गजलक्ष्मी पूजा और नाग पूजा करनी होगी। एक मास उपवास करना होगा।"

यह सुन गाँव का मुखिया, मन ही मन खुश हुआ। परन्तु उसने उस आदमी से कहा—"मैं ये उपवास वगैरह कैसे करूँ....? आपकी दया से भगवान ने मुझे पहिले ही इतना दे रखा है। परन्तु आगे आनेवालों के लिए काम आयेगा, इसलिए जो आपने कहा है, वह अच्छा ही है।"

उसे थोड़ा धन देकर उसने भेज दिया।

फिर मुखिया ने पुरोहित को बुलाकर कहा—"क्यों भाई, ज्योतिषी बता गया है कि मेरी ग्रहस्थिति अच्छी नहीं है। बड़ा नुक्सान होनेवाला है। गजलक्ष्मी व्रत और नागपूजा करने से आनेवाली आपत्ति कुछ कम होगी। उसे कैसे किया जाये? क्या क्या चाहिए उसके लिए? कितना खर्च होगा?"

"जी, यह सच है कि गजलक्ष्मी व्रत करने से सम्पत्ति मिलती है। परन्तु इसके लिए एक महीने तक, बिना भोजन के निष्ठापूर्वक रहना होगा। आधी रात के समय नागपूजा करनी होगी। सवेरे, कुछ दूध पीकर पत्नी के साथ पूजा करनी होगी। बहुत कठिन व्रत है। खर्च की

बलभद्र

क्या बात है? एक हज़ार से अधिक नहीं होगा।" पुरोहित ने बताया।

यह सुन मुखिया का चेहरा उतर आया। उसने कभी उपवास नहीं किया था। भोजन प्रिय भी था। औरों के लिए हो या न हो, कम से कम अपने लिए, दिन में तीन बार, अच्छे पकवान बनाकर, पेट भर कर खाया करता।

"क्या यह उपवास हमसे हो सकेगा?" गाँव के मुखिया ने कहा।

यह सुनते ही पुरोहित को डर लगा कि कहीं आता पैसा चला न जाये। मुखिया ने यह व्रत किया, तो उसकी गरीबी आती रहेगी। इसलिए उसने मुखिया से कहा—"यह ज़रूरी नहीं है कि आप ही व्रत करें, अगर यह काम किसी और दम्पति ने भी किया और उसका सभी खर्च का भार आपने उठाया, तो इसका जो भी फल होगा आपको मिलेगा।"

तुरत मुखिया को, पन्नालाल और उसकी पत्नी याद हो आये। वे बिना प्रत्युपकार की आशा किये हर किसी का उपकार करते थे। व्रत के बाद, यदि उनको कुछ देना भी पड़ा, तो कोई बड़े नुक्सान की बात नहीं थी। पुरोहित को उसने यह कहकर भेज दिया कि वह आवश्यक व्यवस्था कर देगा। फिर वह पन्नालाल के घर गया—"भाई पन्नालाल, तुमसे हमें कुछ ज़रूरी काम है, कहो उसे पूरा करोगे।"

"बताइये, ज़रूर करूँगा।" पन्नालाल ने कहा।

"तुम और तुम्हारी पत्नी को, हमारे घर उपवास करते, गजलक्ष्मी व्रत और नागपूजा करवानी होगी।" मुखिये ने कहा।
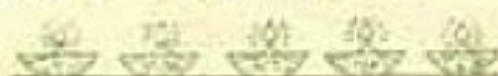
पन्नालाल मान गया। पुरोहित ने व्रत के लिए मुहूर्त निश्चित किया। पन्नालाल और मीनाक्षी उस दिन मुखिया के घर गये और व्रत करने लगे। महीने-भर जो कुछ पुरोहित ने कहा, वह उन्होंने किया। उपवास करके, उन्होंने व्रत पूरा किया। मुखिया खूब खा-पीकर और मुटिया गया था और पुरोहित खूब दक्षिणा पाकर, आराम से घर में था। बिना नींद और भोजन के, सूखकर काँटे हो गये थे। व्रत के बाद मुखिया ने ताम्बूल के साथ दस रुपये देकर, पन्नालाल को भेज दिया।

तुरत कुँआ खोदना शुरु कर दिया गया। तीन गज गहराई तक, जितने कुलियों की ज़रूरत थी, उतने लगाये गये। उसके बाद दो को रखकर, बाकी को मुखिया ने भेज दिया।

जब कुँआ चार गज खुद गया, तो खोदनेवाले के फावड़े से कोई चीज़ लगी और खन्न आवाज़ हुई। तुरत मुखिया ने मज़दूरों से कहा—"पानी तो निकला नहीं अब पत्थर भी आ गया है। अब तुम काम छोड़ दो।" यह कहकर, उसने उन्हें भेज दिया। फिर उसने स्वयं खोदकर एक लोहे का सन्दूक निकाला। उसे वह रात को उठाकर, घर ले गया।

जब उसने लालच में उसे खोला, तो उसकी आँखें चकरा गईं। उसमें पत्थर ही पत्थर थे, शायद किसी से कहीं कोई गलती हो गई थी। इसलिए ही सोने की जगह पत्थर निकले। किसने गलती की होगी? पुरोहित तो करेगा नहीं! गलती करने से उसे कोई फायदा न था। पन्नालाल और मीनाक्षी ने ही कोई गलती की होगी।

यह सोचकर, मुखिया ने पन्नालाल को बुलाया। "तुम्हारे कारण, सब कुछ

सत्यनाश हो गया। इतना रुपया खर्च करके व्रत करवाया, पर कोई फायदा नहीं हुआ। तुमने और तुम्हारी पत्नी ने ठीक तरह व्रत नहीं किया, चोरी चोरी कुछ खाया होगा।" उससे, मुखिया ने कहा।

"आप क्या कह रहे हैं, मुझे समझ में नहीं आ रहा है। जो कुछ पुरोहित ने कहा, हमने किया। आपने क्या सोचा था कि व्रत के परिणामस्वरूप मिलेगा? वह क्यों नहीं मिला?"

मुखिया ने बिना कुछ छुपाये, सब कुछ पन्नालाल को बता दिया। "जैसा कि उस आदमी ने बताया था, वैसे ही चार गज की गहराई पर यह सन्दूक मिला। उसने कहा था कि इसमें खजाना होगा, तुम ही देख लो इसमें क्या है!" पन्नालाल ने सन्दूक खोलकर देखा, तो उसमें सोना था।

मुखिया भागा भागा आया। उसने सन्दूक जो खोला, तो उसे पत्थर ही पत्थर दिखाई दिये। "अरे जो किया सो किया, अब मुझे धोखा भी दे रहे हो? अगर सोना है, तो अपने घर ले जाओ।" उसने कहा।

"अगर आप नहीं चाहते हैं, तो दे दीजिये।" कहकर पन्नालाल, सन्दूक को अपने घर ले गया। उसने राजा को खबर भिजवाई कि उसे एक खजाना मिला है और उस खजाने को, अच्छे कामों में लगाया जाय। राजकर्मचारी आकर, उस सन्दूक को उठाकर ले गये। फिर राजा ने, पन्नालाल को अच्छा खास ईनाम और योग्यता प्रमाण पत्र भी भेजा।

यह सब देख, मुखिया ने सोचा कि उसे धन तो मिला नहीं कीर्ति भी न मिली। उसे इसका अफसोस रहा।

रावण जब अशोकवन में पहुँचा, तो सीता ज़मीन पर बैठी, दुःखी हो राम के बारे में सोच रही थीं। उनके चारों ओर भयंकर राक्षस स्त्रियाँ थीं। रावण ने सीता के पास आकर कहा—"तुम जिस राम पर गर्व कर रही हो, वह युद्ध भूमि में मर गया है। अब तुम्हारे लिए मेरी पत्नी होने के सिवाय कोई और रास्ता नहीं है। वह बिचारा राम बड़ी वानर सेना लेकर, मुझे मारने के लिए उत्तरी समुद्र तट पर आया। जब सब थके-माँदे सो रहे थे, तो हमारे भेदिये सब कुछ देख आये। तब हमारा प्रहस्त, राक्षस सेना के साथ गया और उन पर उसने बाण वर्षा कर दी, सोते हुए राम का सिर काट दिया। लक्ष्मण और कुछ वानर जान बचाकर भाग गये। सुग्रीव हनुमान, जाम्बवन्त, अंगद आदि, वानर वीर मारे गये।"

उसने एक राक्षस स्त्री से कहा—"विद्युज्जिह्व को बुलाओ, वह युद्ध भूमि से राम का सिर लाया है।" विद्युज्जिह्व राम का सिर और बाण लाया। रावण की आज्ञा पर, उन्हें सीता के सामने रखकर, वह तुरत पीछे हट गया।

सामने के सिर में, आँख, बाल, चूड़ामणि आदि देखकर, सीता ने सोचा कि वह सचमुच

राम का सिर था। यह देख कि राम मारे गये थे, वे दुःख के सागर में गोते लगाने लगीं। उन्होंने कैकेयी को कोसा। अपने को ही यह सोच कोसने लगीं कि उनसे विवाह करने के कारण ही राम की यह दुरवस्था हुई थी। उन्होंने रावण से प्रार्थना की कि उनका सिर राम के सिर से मिला दिया जाय और शरीर, शरीर से।

इतने में द्वारपालक ने आकर रावण से कहा कि प्रहस्त आदि मन्त्री, रावण के दर्शन के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। रावण सभा में चला गया, उसके जाते ही राम का सिर और बाण अन्तर्धान हो गये।

विभीषण की पत्नी सरम ने सीता के पास आकर, उन्हें आश्वासन देते हुए कहा—"राम, बानर सेना के साथ, समुद्र पार करके, दक्षिणी तट पर आ गये हैं। यह जानकर ही रावण, मन्त्रियों से बातें करने गया है। रावण की माया का विश्वास न करो।"

रावण उधर दरबार में अपने सेनापतियों से कह रहा था—"भेरी बजाकर, राक्षस सेनाओं को सावधान करो। उनको कुछ न बताओ।" भेरी की ध्वनि सीता और सरम को भी सुनाई दी। "देखा, राक्षस सेना युद्ध के लिए अभी निकल रही है।" सरम ने सीता से कहा। सीता यह देख आश्वस्त हुई।

सरम ने सीता से कहा—"अगर तुम चाहो, तो मैं अभी जाकर, राम के पास जाकर कह सकती हूँ कि तुम सकुशल हो। कहो!"

"यदि तुम मेरी इच्छा ही पूरी करनी चाहती हो, तो मालूम करके आओ कि रावण क्या कर रहा है।" सीता ने कहा।

सरम ने जाकर कहा—"रावण को उसकी माँ और अविद्ध नामक बूढ़े मन्त्री ने तुम्हें छोड़ देने के लिए बहुत समझाया। पर रावण ने उनकी बात न सुनी, उसने कहा जीते जी, वह तुमको न छोड़ेगा। वह अब मन्त्रियों के साथ विचार परामर्श कर रहा है। अब उसकी मौत होकर रहेगी।"

उसी समय वानर सेना का शोर पास आने लगा—यह शोर सुन, राक्षसों के चेहरे फीके पड़ गये। रावण के दरबारियों ने भी उस शोर को सुना।

"राम का समुद्र पार करके आना, उसके बल पराक्रम के बारे में सुनकर, तुम सबका चिन्तित हो उठना मैंने देखा है।" रावण ने अपने दरबारियों से कहा।

तब रावण से उसकी माता की तरफ़ के एक बूढ़े बन्धु माल्यवन्त ने कहा—"राजा, यह ही राजनीति है कि अपने से निर्बल के साथ युद्ध किया जाये और अधिक बलवान के साथ सन्धि की जाये। चूँकि हमारी ओर अधर्म है—इसलिए ही हम बलहीन हैं। इसलिए हमारा राम से सन्धि कर लेना और सीता को उसे सौंप देना उपयुक्त है। हमारी लड़ाई का कारण सीता ही है न! युद्ध तुम्हारे लिये भी लाभप्रद नहीं है। तुमने बहुत-से लोगों से वर पाया है कि तुम मरोगे नहीं, परन्तु तुम अब आये हुए मनुष्य, वानर, लँगूर और भालुओं आदि से नहीं मारे जाओगे, इस बारे में तुम्हें कोई वर नहीं मिला हुआ है। शकुन भी अच्छे नहीं हैं।"

यह सलाह सुन, रावण उबल पड़ा। उसने कहा—"बन्दरों के साथ आया हुआ राम मुझसे अधिक बलशाली है, यह तुम किस बूते पर कह रहे हो! इस छोटे से समुद्र को पार कर लेने मात्र से ही क्या

राम महाबलशाली हो जाता है! मैं सोच समझकर सीता को लाया हूँ—क्या मैं राम के भय से उसे छोड़ दूँगा। मान भी लिया जाय कि राम मुझसे अधिक बलवान है, तो उसे मेरा सिर काट लेने दो, पर मैं उसके सामने नहीं झुकूँगा। यह मेरे स्वभाव के विरुद्ध है। मैं जीने के लिए राम से डरनेवाला नहीं हूँ।"

यह सुन, माल्यवन्त ने शर्मिन्दा हो, सिर झुका दिया। रावण ने अपने मन्त्रियों से सलाह कर नगर की रक्षा की व्यवस्था की, दक्षिणी द्वार पर महोदर और महापार्श्व नियुक्त हुए। पश्चिमी द्वार पर इन्द्रजित नियुक्त किया गया। उत्तर द्वार पर शुक सारण के साथ, रावण स्वयं गया। पूर्व की ओर प्रहस्त को रखा गया। विरुपाक्ष अनेक राक्षस वीरों के साथ, नगर के मध्य प्रान्त में ही रह गया।

लंका नगर की रक्षा की यह व्यवस्था, विभीषण के चारों मन्त्री, पक्षी रूप में आकर देख गये और उन्होंने इसकी सूचना विभीषण को दे दी। विभीषण ने वह जानकारी राम को दे दी। राम ने लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, जाम्बवन्त आदि वीरों से परामर्श किया और लंका नगरी पर किस प्रकार आक्रमण किया जाये, यह निर्धारित किया।

नील से कहा गया कि कुछ वानर सेना के साथ वह पूर्व द्वार की ओर जाकर प्रहस्त से युद्ध करे। अंगद को कहा गया कि दक्षिण द्वार पर महोदर और महापार्श्व से युद्ध करे। हनुमान को पश्चिमी द्वार की ओर जाना था। उत्तर द्वार पर रावण चूँकि स्वयं था, इसलिए राम और लक्ष्मण ने उस ओर जाने का निश्चय किया। नगर के मध्य की सेना का मुकाबला सुग्रीव,

जाम्बवन्त और विभीषण को करना था। राम ने एक और नियम रखा कि युद्ध करते समय सिवाय राम, लक्ष्मण, अंगद, हनुमान, सुग्रीव और विभीषण के कोई और नर रूप में न हो। सब वानर रूप में ही रहें ताकि वे आसानी से पहिचाने जा सकें।

यह निर्णय होते ही राम सुवेल पर्वत पर चलने लगे। उनके साथ लक्ष्मण, सुग्रीव और अन्य वानर प्रमुख पहाड़ पर चढ़ने लगे। वे जब सुवेल पर्वत पर चढ़ गये, तो सामने उनको लंका नगरी दिखाई दी। प्राकारों पर द्वार के आस पास काले राक्षस अस्त्र लेकर युद्ध के लिए तैयार खड़े थे। उनको देखकर वानर गरजे। उसी समय सूर्यास्त हो गया और पूर्ण चन्द्रमा का उदय हुआ।

राम आदि ने सुवेल पर्वत पर ही उस दिन रात को विश्राम किया।

अगले दिन सवेरे वानर सुवेल पर्वत के वनों में टहलने लगे। सुवेल पर्वत से त्रिकूट पर्वत पर बसी लंका नगरी की शोभा देखी! राम, लक्ष्मण और अन्य वानर प्रमुख चकित हो उठे। उस नगर के बड़े बड़े मकान, प्राकार, गोपुर आदि देखकर उनको आश्चर्य हुआ।

उनको तभी रावण दिखाई दिया। उसके ऊपर श्वेत छत्र था, चामर झले जा रहे थे और अमूल्य आभूषण उसने पहिन रखे थे। भारी जरीदार कपड़े पहिन रखे थे।

सब के साथ सुग्रीव भी रावण की ओर देख रहा था कि उसको यकायक गुस्सा आया। वह एक छलांग में सुवेल पर्वत की चोटी से गोपुर पर गया। रावण को घूरकर देखा। हवा में उड़ा और रावण के मुकुट को लात मारकर
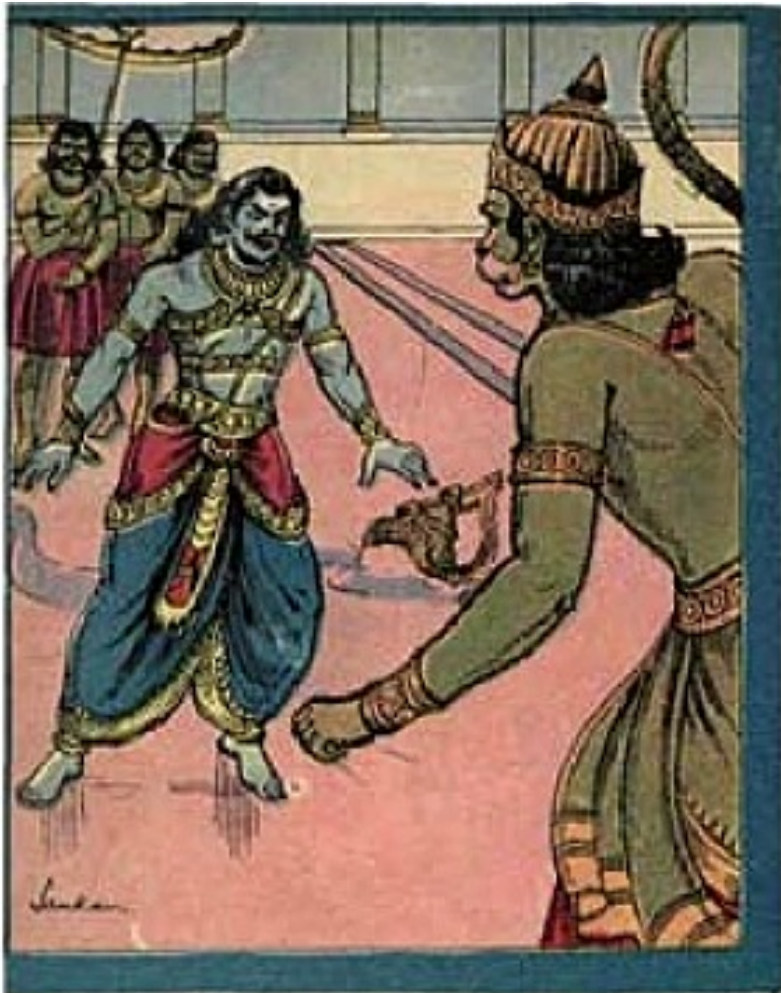
ज़मीन पर आ खड़ा हुआ। रावण ने गुस्से में सुग्रीव को अपने हाथ से मारकर नीचे गिरा दिया। सुग्रीव गेन्द की तरह उठा और उसने रावण को गिरा दिया। दोनों फिर जूझ पड़े। वे काफ़ी देर तक लड़ते रहे। आखिर रावण को तंग होकर माया युद्ध के लिए तैयार होता देख, सुग्रीव वहाँ से आकाश में उड़ गया। रावण ने सोचा कि वह फिर आयेगा, पर वह राम की ओर उड़ गया।

राम ने सुग्रीव को गले लगाकर कहा—"सुग्रीव, तुम राजा हो। इस तरह के जल्दबाजी के काम तुम्हें नहीं करने चाहिए। हमें बड़ी चिन्ता रही। यदि तुम पर कोई आपत्ति आ पड़ती तो हम सब का क्या होता!"

"तुम्हारी पत्नी को उठा ले जानेवाले उस दुष्ट को सामने पा, मैं यूँहि देख नहीं पाया!" सुग्रीव ने कहा।

वे तुरत सुवेल पर्वत से उतरे और वानर सेना के साथ त्रिकूट पर्वत पर जाने लगे। देखते देखते वानरों ने लंका नगरी को घेर लिया। राम की आज्ञानुसार जिस द्वार पर जिन जिन योद्धाओं को लड़ना था, वे सब अपने स्थान पर तैनात हो गये।

तब राम ने अंगद को बुलाकर कहा—"अंगद, तुम निर्भय हो, लंका का प्राकार पार कर जाओ। जहाँ रावण है वहाँ जाओ। उससे कहो—"रावण, तुमने मेरी पत्नी को चुराया है, तुम्हें दण्ड देने के लिए मैं यम की तरह आया हूँ। तुम जिस बल के बूते मेरी सीता को उठा ले गये थे, वह बल अब दिखाओ। यदि सीता को मुझे सौंपकर तुमने मेरी शरण न माँगी, तो मैं, तुम्हें और तुम्हारे
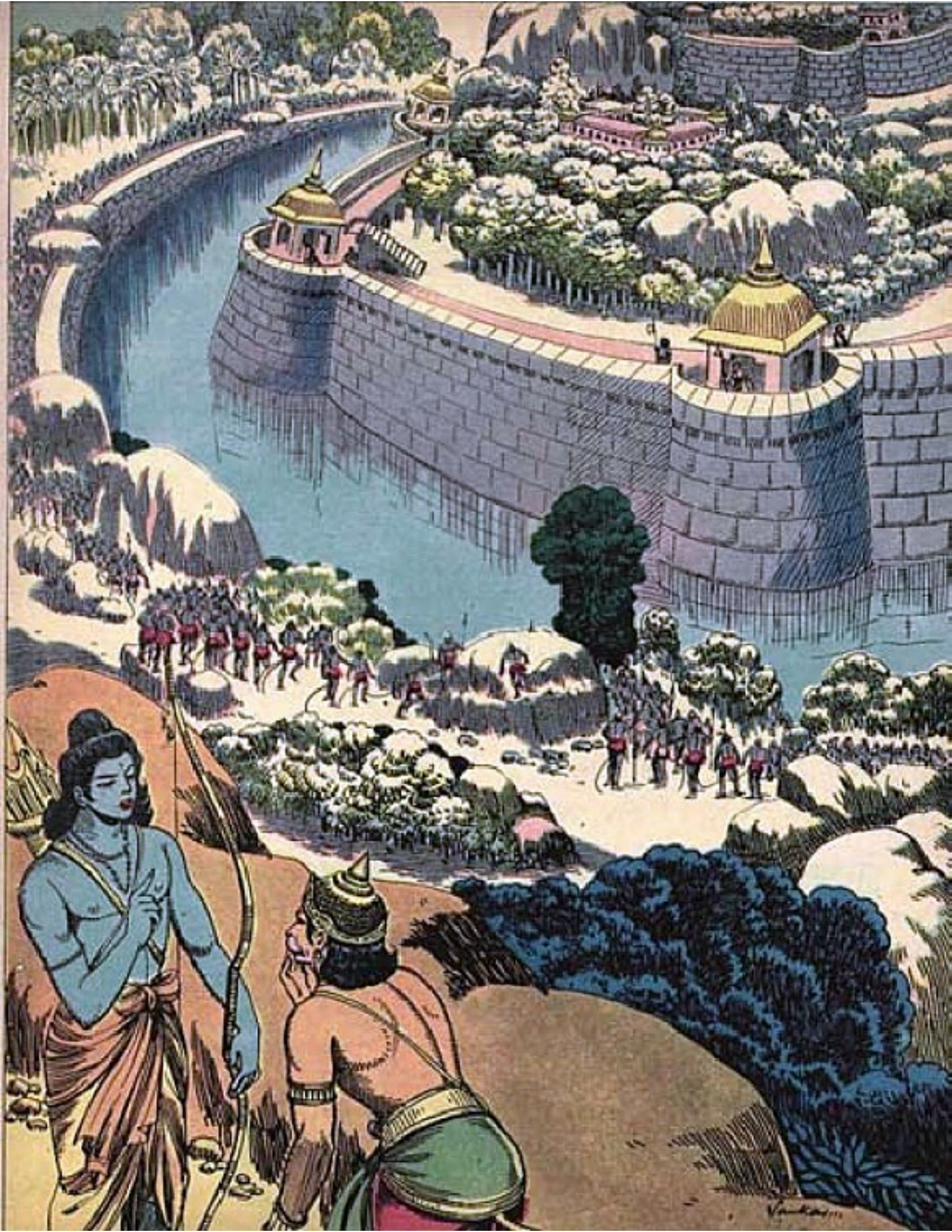
कुल का नाश करके, विभीषण को राजा बनाऊँगा। तुम मूर्खों का भरोसा कर रहे हो, इसलिए तुम में राज्य करने की योग्यता नहीं रह गई है। यदि शरण नहीं चाहते हो, तो मुझ से युद्ध करके और मेरे हाथ मरकर पवित्र हो जाओ।"

अंगद यह सन्देश लेकर आकाश में उड़ा और लंका नगरी में गया। रावण जहाँ अपने घर में अपनी पत्नियों के साथ सलाह मशवरा कर रहा था वहाँ गया और रावण की बगल में खड़ा हो गया। उसने रावण को बताया कि वह कौन था, राम ने जो कुछ कहने के लिए कहा था, उसे वैसा का वैसा कह सुनाया।

यह सुन रावण अपना क्रोध रोक न सका। वह बार बार चिल्लाया—"इस अंगद को मार दो।" चार राक्षस उसे पकड़ने आये। अंगद ने उनको पास आने दिया। फिर उनको बगल में दबाकर वह रावण के घर के प्राकार पर जा खड़ा हुआ। वह प्राकार पर्वत-सा था। जब वह उड़ा, तो राक्षस नीचे गिर गये।

उस प्राकार का गोपुर अंगद को दिखाई दिया। जब अंगद ने उस गोपुर को एक लात मारी तो वह टूटकर नीचे गिर गया। अंगद ने अपना नाम इस जोर से चिल्लाया कि सब सुन लें। फिर वह उड़कर राम के पास गया।

इतने में कुछ राक्षसों ने आकर बताया कि वानरों ने लंका को घेर लिया था। रावण क्रुद्ध हो अपने नगर को घेरनेवाले बन्दरों की सेना देखने के लिए अपने महल की छत पर आया। वानरों को सारी भूमि पर देख उसको आश्चर्य हुआ।

ध्रुव

[२]

फिर विष्णु, गरुड़ बाहन पर आसीन होकर मधुवन चले गये। ध्रुव ने उनको देखते ही साष्टाङ्ग नमस्कार किया। उसे बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि वह छोटा था, इसलिए वह न जान सका कि कैसे विष्णु की स्तुति की जाय। वह दुविधा में था। यह देख, विष्णु ने ध्रुव के माथे पर अपना शंख रखा। उससे ध्रुव को वाक्शुद्धि मिली और वह विष्णु की स्तुति करने लगा।

ध्रुव की तपस्या से सन्तुष्ट होकर विष्णु ने वर दिया कि ध्रुव को राज्य प्राप्ति हो। वह २६ हज़ार वर्ष राज्य करे, समस्त ऐहिक सुखों का अनुभव करे, फिर तीनों लोकों में स्थिर स्थान में रहने के लिए, नक्षत्र बने और देवता उसकी प्रदक्षिणा करें वह गरुड़ पर सवार होकर चला गया।

इस प्रकार अपनी इच्छा पूरी करके ध्रुव अपने नगर चला आया। यह खबर सुनकर उत्तानपाद इस प्रकार आनन्दित हुआ, जैसे कोई मृत पुनर्जीवित हो गया हो। जो यह खबर लाया था, उसको अनन्त धन देकर, सोने के रथ पर सवार होकर, नौकर-चाकरों के साथ तथा, मंगलवाद्यों के साथ, ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर निकल पड़ा। उसकी पत्नियाँ सुनीति और सुरुचि सोने की पालकियों में सवार होकर, उत्तम को लेकर राजा के साथ निकलीं।

नगर पार करके वे उद्यान में आ रहे थे कि उनको ध्रुव दिखाई दिया। तुरत उत्तानपाद रथ से उतरा, अपने लड़के का आलिंगन किया, आनन्दाश्रुओं से उसको भिगो दिया।

ध्रुव ने अपने पिता और माताओं को प्रणाम किया, सुरुचि, यद्यपि सौतेली माँ थी, तो भी उसने उसका आलिंगन करके, गदगद कंठ से उसको आशीर्वाद दिया।

ध्रुव को हाथी पर सवार करके, नगर में ले गये। नगर में जगह जगह, तरह तरह के तोरण बँधे थे। केले के पत्ते लगाये गये थे। पूर्णकुम्भ से उसका स्वागत किया गया। दीपों से नगर अलंकृत किया गया था। वह चमचमा रहा था। ध्रुव पर पुष्प वर्षा की गई। आरतियाँ उतारी गयीं। आशीर्वाद दिये गये। वह राज सुखों का अनुभव करता, अपने पिता के साथ ही रहने लगा।

समय बीतता गया। उत्तानपाद वृद्ध हो गया। ध्रुव सयाना हो गया। उसे प्रजा पर प्रेम और प्रजा को उस पर प्रेम हो गया। यह देख, उत्तानपाद ने ध्रुव का राज्याभिषेक किया और स्वयं बनवास के लिए चला गया।

ध्रुव ने राजा शुंशुमार की लड़की प्रमी से और इला से यथाविधि विवाह किया। प्रमी के कल्प और वत्सर दो लड़के हुए। इला के उत्कल नामक पुत्र और एक पुत्री हुई।

उत्तम विवाह के पूर्व ही शिकार के लिए हिमालय गया, वहाँ एक यक्ष ने उसको मार दिया। उसकी माँ सुरुचि भी मर गयी।

यह जान कि यक्ष ने उसके भाई को मार दिया था ध्रुव को क्रोध आया और वह अलकापुर पर आक्रमण करने निकला। नगर के बाहर उसने शंख बजाया। तुरत

सायुध गुह्य नगर से बाहर आये और ध्रुव से युद्ध करते लगे। उन्होंने उस पर बाण वर्षा की पर ध्रुव ने परवाह न की। उसने सब पर बाण छोड़े, एक भी नहीं बचा, सब चले गये।

यह देख, ध्रुव नगर में घुसा। वह नगर देखकर खुश हो रहा था कि समुद्र की ध्वनि की तरह कोई ध्वनि आने लगी। देखते-देखते बादल घिर आये। बिजलियाँ गरजने लगीं। सभी दिशाओं में धूल उठी, खून की वर्षा होने लगी। उसके साथ धड़ और हथियार गिरे। आकाश में पहाड़-सा दिखाई दिया। पत्थर बरसे। यह देख कि यह सब शत्रु का मायाजाल था, ध्रुव ने नारायणास्त्र चढ़ाया। तुरत माया समाप्त हो गई। ध्रुव ने भागते हुए गुह्यों को मार काटा।

तब ध्रुव के बाबा स्वायंभव ने आकर कहा—"बेटा, पाप का कारण क्रोध छोड़ दो। उसी कारण, तो तुमने निर्दोष गुह्यों को मारा। तुम्हारे भाई को एक ने ही मारा था, पर तुमने अनेकों को मार दिया। हमारे वंश पर कलंक न लगाओ। जाओ, कुबेर से मैत्री कर लो।"

यह जानकर कुबेर, यक्ष, किन्नर, चारण आदि के साथ, ध्रुव के पास आया। ध्रुव ने नमस्कार किया। कुबेर ने कहा— "मुझे बड़ा सन्तोष है कि तुमने क्रोध छोड़ दिया है। यह गलत है कि उन्होंने तुम्हारे भाई को मारा। पर ऐसी बातें कालानुसार होती रहती हैं। क्षेम पूर्वक जाओ।"

इस प्रकार का स्नेह पाकर, ध्रुव अपने नगर वापिस आ गया। बीस हज़ार वर्ष राज्य करके, राज्य छोड़कर बदरिकाश्रम चला गया। उसने मन्दाकिनी तीर्थ में स्नान किया। वह स्नान करके समाधि में था कि आकाश से एक प्रकाशमान दिव्य विमान नीचे आया। यह विमान ध्रुव को ले जाने के लिए भेजा गया था। उसमें चार हाथवालें, नील शरीरवाले, मुकुट आदि पहिने, सुनन्द और नन्द, विष्णु के दो दूत थे।

ध्रुव ने उनको प्रणाम किया और उन्होंने ध्रुव से कहा—"उस विष्णु ने, जिसको तुमने पाँचवें वर्ष की उम्र में साक्षत्कार किया था, तुम्हारे लिए विमान भेजा है। तुम्हें वह स्थान मिलनेवाला है, जो तुम्हारे पूर्वजों और सप्तर्षियों को नहीं मिला था। वहाँ से तुम्हें सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारों की प्रदक्षिणा, तुम्हें दिखाई देगी।"

ध्रुव ने यह सुन सन्तुष्ट होकर, विमान में सवार होते हुए कहा—"मैं अपनी माँ को यहाँ छोड़कर, कैसे आऊँ!"

तब विष्णु के दूतों ने एक और दिव्य विमान में उसकी माँ को स्वर्ग जाते हुए दिखाया। वह सन्तुष्ट होकर, ज्योति चक्र में ध्रुव मण्डल चला गया।

३५. कान्चन जंगा

नेपाल और सिक्कम के बीच की सीमा पर स्थित कान्चन जंगा को सिक्कम के लोग "देव निवास" कहते हैं। एवरेस्ट, के-२ की चोटियों के बाद संसार में सबसे ऊँची चोटी यही है (२८,०८६ फीट) १९५५ में एक ब्रिटिश दल जब इस पर चढ़ा, तो सिक्कम महाराजा की इच्छा पर, दल के सदस्यों ने इसके शिखर पर पैर न रखा, परन्तु शिखर के पांच फीट नीचे तक जाकर उतर आये।

Photo by T. S. Nagarajan
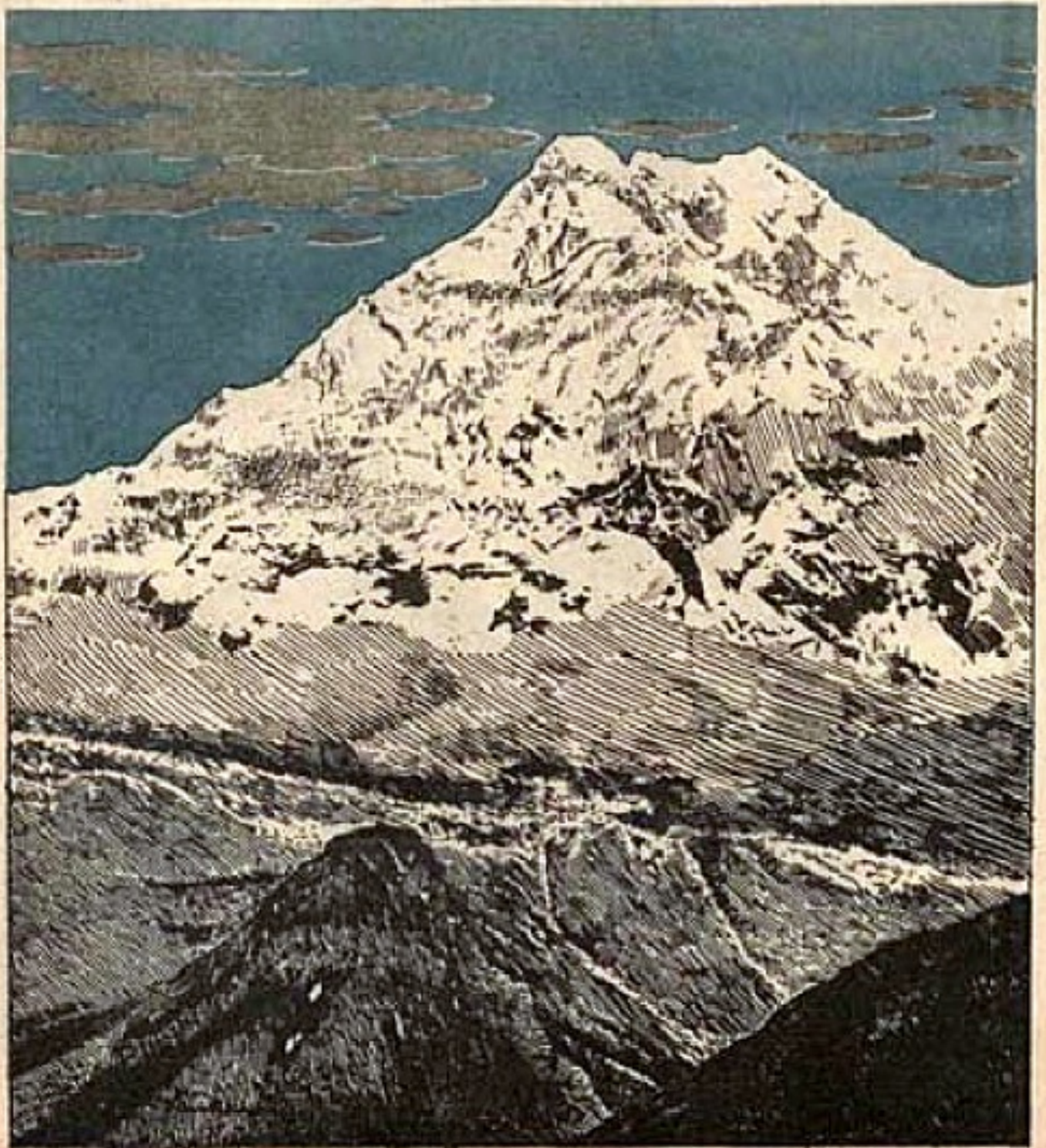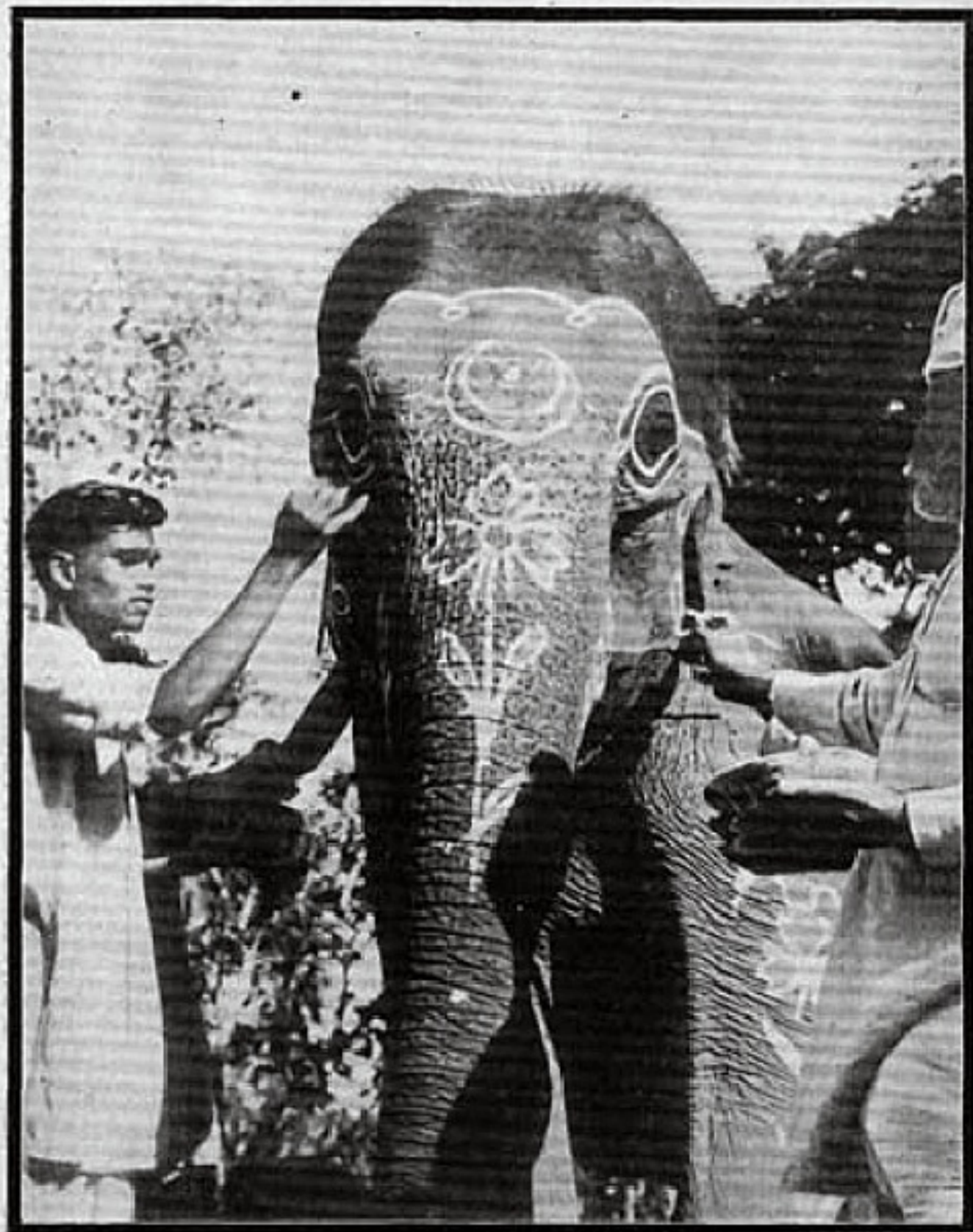
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

पशु को दोगे अगर दुलार!

प्रेषक:
गिरिधर गोपाल - बैसरिया

Photo by K. P. A. Swamy

पुरस्कृत परिचयोक्ति

पाओगे तुम इनका प्यार !!

प्रेषक : गिरिधर गोपाल - बैसरिया

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जनवरी १९६५ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ नवम्बर १९६४ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

नवम्बर – प्रतियोगिता – फल

नवम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **पशु को दोगे अगर दुलार !**
दूसरा फ़ोटो : **पाओगे तुम इनका प्यार !!**

प्रेषक : गिरिधर गोपाल,
गहानी पुस्तक भण्डार, बैसरिया (म. प्र.)

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

बजाज
केस्री
विद्युत साधन

डीलक्स टोस्टर

डीलक्स गीज़र

सीनियर कुकिंग रेंज

आज
ही
खरीदिए
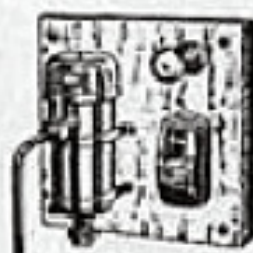
रेग्युलेटर हॉट प्लेट

केतली

ऑटो सुपर आयर्न

उत्कृष्टता का प्रतीक	बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ४८-५० वीर नरीमान रोड बम्बई-१

२/२२, माउंट रोड, मद्रास-२

SQUIBB
Phosfomin
VITAMINS ELIXIR
SQUIBB
Phosfomin
SQUIBB
Phosfomin
VITAMINS ELIXIR
A Century of Experience
Builds Faith
SARABHAI CHEMICALS

Kodak Limited, (Incorporated in England with Limited Liability)
Bombay · Calcutta · Delhi · Madras